



युवा जीवन

नवम्बर 2022

सुरक्षा

911

यद्यपि संसार की सुरक्षाएँ
अस्थिर हैं, केवल यीशु की
सुरक्षा ही स्थिर है !!



भूमिका

यीशु मसीह के नाम से प्यारे
युवा दिलों को प्रेम का
अभिवादन !

जब हम सुरक्षा के बारे में कहते हैं, तो पैदल सेना (जमीन बल), नौसेना बल और वायु सेना ऐसी चीजें हैं जो हमारे दिमाग में तुरंत आती हैं। चूंकि ये सभी हमारे देश की रक्षा के लिए लड़ने वाले सेनानी हैं। लेकिन अगर शहर में कोई खतरा है, खासकर अगर आग से कोई खतरा है, तो अग्निशामक दल है जो अपनी की जान की परवाह किए बिना लोगों को बचाने के लिए दौड़ता है। कुछ लोग अपनी जान गंवाने की हद तक, लोगों की रक्षा के लिए बड़ी जिम्मेदारी और बलिदान के साथ कार्य करते हैं।

उस सूची में ओरियो पामर थे, जिन्होंने 9/11 के दिन टॉवर ब्लास्ट में दूसरों को बचाने के लिए अपनी जान गंवा दी थी। नॉर्थ टावर पहला प्रहार होने के कुछ मिनट बाद, यूनाइटेड एयरलाइंस की फ्लाइट 175 ने साउथ टॉवर की 78वीं मंजिल से टकराई, जिससे बड़ी आशंका हुई। अग्निशामक ओरियो पामर और उनकी टीम ने तुरंत इमारत में प्रवेश किया और लोगों को बचाना शुरू किया। जब सभी लिफ्ट पलक झपकते ही बंद हो गई, तो उन्हें एक काम करने वाली लिफ्ट मिली और इसका इस्तेमाल 41 मंजिल पर जाने के लिए किया और एक बचाव अभियान चलाया। साउथ टावर के जमीन पर गिरने से पहले उसने कई लोगों को बचाया। यहां तक कि जब उसे पता था कि जिस इमारत पर वह खड़ा था वह कुछ ही मिनटों में ढह जाएगी, वह अपने साथ काम करने वाली टीम को अंतिम क्षण तक सभी लोगों को हर कीमत पर बचाने का निर्देश देते रहे, जब तक कि उनकी जान नहीं चली गई।

उसी तरह, परमेश्वर हमारे रास्ते में आने वाले हर खतरे और फन्दे से हमारी रक्षा करते हैं। दुश्मन चाहे कितनी भी बुराई करे और हमारे जीवन को नष्ट करने की योजना बना ले, परन्तु परमेश्वर हमारे चारों ओर एक सुरक्षा कवच और एक स्तंभ है। उसकी सुरक्षा से परे कुछ भी आपको छू नहीं सकता।

वह वही है जिसने आपके लिए अपनी जान दे दी। वह न तो तुम्हें छोड़ेगा और न ही आप पर आस करना छोड़ेगा। जब वह असली रक्षक है, तो कोई भी खतरा आपके पास नहीं आएगा!

ओरियो पामर की तरह ही, पाप में मर रहे युवाओं को बचाने का प्रयास करें। यदि तुम यहोशू की नाई उठो, तो देश के जवान छुड़ाए जा सकते हैं।

आपका रक्षक यीशु मसीह है, आपकी ओर से लड़ने के लिए, आपकी रक्षा करने और मजबूत करने के लिए !!

मसीह के मिशन में
अविनाश





REVIVAL

जागृति की शक्ति

मुझे विश्वास है कि आप जो हर महीने जागृति का संदेश पढ़ रहे हैं, हर महीने जागृति के लिए प्रार्थना करेंगे, इस महीने हम जागृति की शक्ति को देखने जा रहे हैं। जब परमेश्वर की शक्ति प्रकट होती है, बहुत से लोग बच जाते हैं और हमारे प्रभु को परमेश्वर के रूप में स्वीकार करते हैं।

परमेश्वर ने पतरस और पौलुस जैसे शुरुआती प्रेरितों को अपनी शक्ति से भर दिया और उनके द्वारा बहुत से लोगों को अपनी ओर मोड़ा। “वे बीमारों को सड़कों पर लाकर, खाटों और खटोलों पर लिटा देते थे, कि कम से कम पतरस की छाया ही उन में से किसी पर पड़ जाए” (प्रेरितों के काम 5:15)। वे आसपास के गांवों से बड़ी संख्या में पापियों और अशुद्ध आत्माओं से ग्रसित लोगों को यरूशलेम ले आए। वे सभी चंगे हो गए। चूंकि परमेश्वर की शक्ति वहाँ प्रकट हुई थी, पुरुषों और महिलाओं की भीड़ ने यीशु को प्रभु के रूप में स्वीकार किया और कलीसिया में जोड़े गये। पूरा शहर बदल गया था। हर जगह यीशु के नाम को महत्व दिया गया। परमेश्वर, पौलुस के साथ थे जहाँ भी वह गया, वहाँ उसकी शक्ति प्रकट करके और कई अन्यजातियों को उनकी ओर कर दिया। लंगड़े, अपाहिज और जो अशुद्ध आत्माओं के वश में थे वहाँ उनके द्वारा चंगा किये गए। जहाँ कहीं भी वे गए, परमेश्वर की शक्ति प्रकट हुई और लोगों में एक महान जागृति आई।

यहोवा ने अपने सेवकों के द्वारा हमारे देश में अपनी सामर्थ्य दिखाई है। जब टी. एल. ऑस्बॉर्न पवित्र शास्त्र और परमेश्वर के वचन का

प्रचार करने भारत आए, तो एक भी व्यक्ति ने यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार नहीं किया। इससे थक कर वे वापस अपने मूल देश अमेरिका चले गए, और परमेश्वर की सेवा करने लगे। वहाँ भी वे इतना बढ़िया नहीं कर सके। इसका कारण जानने के बाद, उसने उपवास किया और परमेश्वर की उपस्थिति में प्रार्थना की और उसकी शक्ति प्राप्त की। इसके तुरंत बाद उनकी सेवकाई का मार्ग बदलने लगा। 40 वर्षों की अवधि में उन्होंने यीशु का प्रचार करने के लिए 70 से अधिक देशों का दौरा किया। वह जहाँ भी जाते, लोगों की भीड़ चंगी होती और यीशु को ग्रहण करने लगती। हजारों लोगों के बीच उनके द्वारा परमेश्वर की सामर्थ्य प्रकट हुई। एक विशेष सभा में जब उनके द्वारा परमेश्वर की शक्ति प्रकट हुई, तो 96 अंधे लोगों ने अपनी दृष्टि प्राप्त की।

1961 में वे भारत वापस आये और कोलकाता, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु के कई स्थानों में सेवकाई की। उसके माध्यम से, परमेश्वर ने अपनी शक्ति भेजकर लोगों को चंगा किया और उन्हें अशुद्ध आत्माओं के चंगुल से मुक्त किया। बहुत से लोगों ने यीशु को स्वीकार किया।

मेरे प्रिय युवाओं! परमेश्वर की उपस्थिति में प्रतीक्षा करें ताकि आप भी उसकी शक्ति प्राप्त कर सकें। प्रभु यीशु मसीह आपको अपनी शक्ति से भरे और आप जहाँ भी जाएं लोगों को उसकी ओर फेरें। आपके माध्यम से परमेश्वर की शक्ति प्रकट होगी और राष्ट्र में एक महान जागृति होगी।

यीशु के साथ मेरी यात्रा ।

यह एक बहन के साथ एक साक्षात्कार है जो एक ईसाई परिवार में पैदा हुई थी, जो बचपन में एक बीमारी से पीड़ित थी, अपनी मां की प्रार्थनाओं के द्वारा परमेश्वर से चंगाई पाई , और अब एक किशोरी के रूप में प्रभु की सेवा कर रही है ।

हमारी चर्च हम सभी को एक युवा सभा में ले गए, जब मैं 15 साल की थी, और 10वीं कक्षा में पढ़ रही थी। मुझे वहीं उद्धार मिला। उसके बाद, मैंने प्रभु पर भरोसा रखते हुए उनकी उपस्थिति में हर दिन 1 घंटे के लिए प्रार्थना करना शुरू कर दिया। शुरू में, मेरा मज़ाक उड़ाया गया और चिढ़ाया गया, जैसे “यह प्रार्थना कितने दिनों तक चलेगी।” लेकिन परमेश्वर की कृपा ने मुझे हर दिन प्रार्थना करने के लिए मदद की।

हमें अपने परिवार और बचपन के बारे में बताएं?

मेरा नाम एन्ना रोज़लिन है। मेरा जन्म एक ईसाई परिवार में तेनकासी जिले के सुरंदई के पास करुवंत नामक एक गाँव में हुआ था। मैं अपने माता -पिता, श्री डैनियल देव पिचाई और श्रीमती एन्ना बाकिया सेलवी के पहले बच्चे के रूप में पैदा हुई थी। मेरी एक छोटी बहन और एक छोटा भाई है। मेरा परिवार खेती और पशुपालन करता है। मैं अपने जन्म के कुछ दिनों के भीतर अक्सर बीमार हो जाती थी। मेरी माँ कहती थी कि मैं ऐसी स्थिति में थी जहाँ मेरे जीवित रहने की कोई संभावना नहीं थी। उस समय, मेरी माँ ने मुझे परमेश्वर को सौंपते हुए प्रार्थना कर के कहा, “यदि आप मेरी बेटी को जीवित करते हैं, तो वह आपको अपने सर्वोत्तम तरीके से सेवा देगी।” मैं हालाँकि कई बार बीमार हो गयी थी। फिर भी, परमेश्वर ने मुझे चमत्कारिक रूप से सुरक्षा दी। जब मैं एक छोटी लड़की थी, तो एक बार पिकनिक पर, मैंने अपना रास्ता खो दिया, जबकि मैं अपने पिता की तलाश कर रही थी। एक बहन मुझे अपने माता -पिता के पास वापस ले आई जब हर कोई मेरी तलाश कर रही थी। इस प्रकार, परमेश्वर ने कई बार मेरी सुरक्षा की। मैं बचपन में नियमित रूप से चर्च जाती थी। मैं कभी भी रविवार की कक्षाओं में भाग लेने से नहीं चूकी। मुझे नियमित रूप से हर बाइबिल क्विज़ और संडे स्कूल की कक्षाओं में विफल किए बिना पुरस्कार मिलता है। हालाँकि, पापी इच्छाएं अभी भी मुझमें बनी हुई थीं।

ठीक है... आपके शारीरिक गुण आप में बने हुए थे... आपने कहा था कि आपको चर्च में पुरस्कार मिले हैं... यदि हां, तो आपने कब उद्धार पाया?



बहन एन्ना रोज़लिन अपने परिवार के साथ



अच्छा... आपने उद्धार पाया और प्रार्थना करने लगीं ... अपनी स्कूली शिक्षा के बारे में बताएं?

परमेश्वर ने मुझे बचपन से ही पढ़ने के लिए अच्छी सद्बुद्धि दी है। मैं अच्छी पढ़ाई करती थी। मेरे सभी शिक्षकों के बीच मेरी अच्छी प्रतिष्ठा थी। परमेश्वर की कृपा से, मैं अपनी स्कूली शिक्षा के दौरान हमेशा परमेश्वर को सबसे आगे रखती थी। हालाँकि, मुझमें कुछ गैर आत्मिक चीजें थीं जैसे सिनेमा देखना और गुस्सा करना। परमेश्वर ने मुझे अपनी स्कूली शिक्षा अच्छे ग्रेड के साथ समाप्त करने की कृपा दी।

शानदार... आपने अपनी स्कूली शिक्षा पूरी की... आपका कॉलेज का जीवन कैसा था?

मैं अपनी स्कूली शिक्षा खत्म करने के बाद बायो-टेक का अध्ययन करना चाहती थी। चूंकि मुझे इसे आगे बढ़ाने का मौका नहीं मिला, इसलिए मैंने अपनी मां की इच्छा के अनुसार चेन्नई के एक कॉलेज में इंजीनियरिंग के लिए आवेदन किया। लेकिन परमेश्वर ने मना किया और मुझे मेरे गांव के पास एक इंजीनियरिंग कॉलेज में पढ़ाया। मैं तब परमेश्वर की योजना की थाह नहीं ले सकी। मेरी इच्छा थी कि मैं हॉस्टल में रहकर पढ़ाई करूँ, इसलिए मैंने चेन्नई के एक कॉलेज के लिए आवेदन दिया था। मेरे अंदर वह लालसा थी क्योंकि मैं



इससे उबर नहीं पायी। मैंने अपने कॉलेज के शुरुआती दिनों में यीशु से पीछे हटना शुरू कर दिया था। पढ़ाई में एक छोटी सी असफलता ने भी मुझे बहुत प्रभावित किया।

प्रार्थना टीम मैं भी औरों की तरह सांसारिक जीवन में जाने लगी। मैं जो प्रभु से दूर होने लगी, मेरे भीतर शांति नहीं थी। लेकिन, परमेश्वर ने मुझे ऐसे ही जाने नहीं दिया। दुबारा से प्रभु ने एक और युवा सभा के द्वारा मेरे साथ हस्तक्षेप किया। जब मैं कॉलेज की प्रयोगशाला में थी तब उन्होंने मुझे स्तुति के अभिषेक से भर दिया। वह मुझसे कई चीजों के जरिए बात करते रहते हैं कि वह मुझसे प्यार करते हैं। मैंने अपने कॉलेज के दिनों में यीशु को अपने मिल के रूप में स्वीकार किया था। मैं अपनी छोटी-छोटी बातें भी सब कुछ यीशु के साथ वैसे ही साझा करती थी जैसे किसी मिल के साथ साझा करती हूँ। मेरे कॉलेज के दिनों के अंतिम वर्ष में यीशु और मैंने एक मजबूत दोस्ती विकसित की।



ठीक है... आपके और यीशु के बीच एक मजबूत मिलता स्थापित हो गई थी... आपका प्रार्थना जीवन कैसा था?

अपने उद्धार के शुरुआती दिनों में, मैं एक घंटे की प्रार्थना करती थी। हालाँकि, मेरे कॉलेज के दिनों में, मेरी प्रार्थना का समय कम हो गया था। लेकिन, परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते को नवीनीकृत करने के बाद, मैंने पहले की तरह प्रार्थना करना शुरू कर दिया। परमेश्वर ने मुझे प्रार्थना और प्रतीक्षा के नए अनुभवों को दिया। प्रभु दर्शनों के द्वारा मुझसे बातें करते हैं।

ठीक है... परमेश्वर आपसे बात करते हैं... आपने अपनी शिक्षा पूरी की... क्या आपने नौकरी के लिए प्रयास किया?

अपना कॉलेज पूरा करने के बाद मैं 2 महीने चेन्नई में रहीं और नौकरी की तलाश की। भले ही परमेश्वर ने मुझे अच्छे अंक और कौशल दिए हों, लेकिन मुझे कोई नौकरी नहीं मिली।

एक दिन, मैं चेन्नई के एक चर्च में गयी और प्रार्थना की, 'अगर मैं आपकी इच्छा के बिना चेन्नई आयी हूँ, तो कृपया मुझे मेरे गृहनगर वापस ले चलो। प्रभु ने मेरी प्रार्थना सुनी। उस समय मेरी माँ ने फोन किया और मुझे एक छोटी सी बात के लिए शहर आने को कहा।

गांव में रहते हुए परमेश्वर ने मुझे एक वादा दिया था।

उसके अनुसार, उन्होंने मुझे एक सॉफ्टवेयर कंपनी में नौकरी की पेशकश की जो मेरे गांव के पास थी। छात्रावास में रहने का मेरा सपना इस बार भी पूरा नहीं हुआ।



प्रार्थना टीम

बढ़िया!... आपको नौकरी मिल गई... क्या आप खुशी-खुशी नौकरी कर पायीं?

जिस स्थान पर मैं काम करती थी, वहीं मुझे सबसे बड़ा प्रलोभन मिला। मुझे डर था कि यह मुझे परमेश्वर से अलग कर देगा। मैंने अपना प्रार्थना जीवन खो दिया। लेकिन, परमेश्वर ने मुझे किसी भी हाल में नहीं छोड़ा। जब मैंने नौकरी से इस्तीफा देने की कोशिश की, तो उन्होंने मुझे काम करने के लिए प्रोत्साहित किया और कहा कि आपको उस जगह से एक विजेता के रूप में बाहर आना चाहिए और उन्होंने मुझे काम करने की ताकत भी दी। मैं परमेश्वर की कृपा और उनके प्रचुर प्रेम से सुरक्षित कि गई थी। मुझे फिर से उसी पापपूर्ण प्रलोभन में गिरने का मौका मिला। मैंने पिछले साल अक्टूबर में अपनी नौकरी छोड़ दी, क्योंकि मैं ऐसी नौकरी नहीं चाहती थी जो मुझे परमेश्वर से अलग करे। उसके बाद, मैंने एक यू-ट्यूब चैनल शुरू किया और मसीही वीडियो, लघु कथाएँ और बाइबिल वचन पोस्ट करना शुरू किया। लोग कहने लगे, यह उनके लिए फायदेमंद था। यू-ट्यूब चैनल निश्चित रूप से उस तनाव को दूर करने में सहायक था जो उस प्रलोभन के बाद उत्पन्न हुआ था जिसका मैंने कार्यस्थल पर सामना किया था।

अरे नहीं!... आपने मनचाही नौकरी छोड़ दी... तो उसके बाद क्या किया?

अपने कॉलेज के दिनों में मैंने अपने चर्च में एक प्रार्थना सैल शुरू किया और इसे लंबे समय तक जारी नहीं रख सकी। बाद में, मैंने सुरंदई में अपने कॉलेज के दिनों में हुई एक युवा बैठक में भाग लिया। उसके बाद, मुझे हर महीने होने वाले सिनर्जिया में भाग लेने के लिए फोन पर आमंत्रित किया गया। मैं हमेशा वहाँ जाने के बारे में सोचती थी, लेकिन मुझे इसमें शामिल होने में एक साल से अधिक समय तक बाधाएँ आईं। हालाँकि मैंने सिनर्जिया में भाग लेना तब शुरू किया जब मैं कॉलेज के अंतिम वर्ष में थी। मैंने वहाँ स्वेच्छा से काम करना शुरू किया। मैं गाने गाती और दूसरे काम भी करती। नालुमवाड़ी में एक युवा उत्सव में भाग लेने के बाद मैंने पहली बार प्रचार करना शुरू किया।

जब भी मैं काम के बाद बस में चढ़ता, तो अपने दोस्तों के साथ बैठने के बजाय हमेशा उसी जगह बैठती जहाँ परमेश्वर मुझे हिलाते थे। परमेश्वर हमेशा मेरे पास सही आत्माएँ लाते हैं। मैं उन्हें यीशु के प्रेम के बारे में बताती।

मेरे पास हमेशा मेरे धैले में ट्रैक्ट होते हैं, और मैं इसे उन लोगों को देती जिन्हें परमेश्वर संकेत देते। उस समय मुझे पाप के कई प्रलोभन थे और मैंने अपना प्रार्थना जीवन खो दिया। यह वो समय था, मैंने रिवाइवल इग्राइटर्स कैप में भाग लिया था। यह मेरे लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ था। जो शब्द मोहन



अंकल के माध्यम से आया कि “ईश्वर आप पर विश्वास करता है” मुझे छू गया और मैंने खुद को यीशु को सौंप दिया।

फिर मैंने एक प्रार्थना सैल शुरू किया और दो बहनों के साथ मिलकर प्रार्थना की, जो मेरे वै से उसी कैप में शामिल हुई थीं। हम 10-15 सदस्यों के रूप में प्रत्येक सप्ताह शाम के समय राष्ट्र के लिए प्रार्थना करने के लिए एकत्रित होते थे।

बाद में 2021 में, जेबामलाई में हुई एक अनुवर्ती बैठक के माध्यम से, हमने वी.के. पुडुर तालुक में दो प्रार्थना सैल शुरू किए और प्रार्थना करना आरंभ किया। अब, परमेश्वर तीन प्रार्थना सैल संचालित करने का अनुग्रह प्रदान कर रहे हैं।

ठीक है... आप प्रार्थना सैल में प्रार्थना कर रहे हैं... अभी यीशु के साथ आपका रिश्ता कैसा है?

2022 की शुरुआत में मैंने एक दर्शन पाया जिसमें मैं एक ऐसे खेत से गुजर रही थी जहां धान के दाने पके हुए थे लेकिन अनुपयोगी थे। मैंने दर्शन की उपेक्षा की और परमेश्वर ने कई वचनों के माध्यम से मेरे साथ हस्तक्षेप किया। चूंकि, मैंने उनके वचनों का पालन नहीं किया, मैं उनकी उपस्थिति को खोने लगी।

उसके बाद, बहुत जोश के साथ, मैंने सबसे पहले ट्रैक्ट सेवकाई करना शुरू किया। मैं हर महीने कम से कम दो बार ग्राम सेवा जाने की कोशिश करती थी। जब हम गांव में जाते और ट्रैक्ट बांटते हैं, तो लोग अपना बोझ बांटते हैं और यह मेरे लिए प्रार्थना करने के लिए बहुत उपयोगी होता है। अब मैं परमेश्वर के हस्तक्षेप और मेरे साथ उसकी बातचीत को स्पष्ट रूप से महसूस कर सकती हूँ। जब मैं प्रार्थना में प्रतीक्षा करती हूँ, तो वह दर्शन में राष्ट्र के बारे में चीजों को प्रकट करते हैं और मुझसे इसके लिए प्रार्थना करने का आग्रह करते हैं।

। वह मुझे बाइबल का ध्यान कराते हुए कई सच्चाई सिखाते हैं और जब मैं कुछ गलत करती हूँ, तो वह मुझे डांटते हैं। आध्यात्मिक जीवन में कमजोरियाँ, थकान और संघर्ष आने पर वह कभी मेरा साथ नहीं छोड़ते। वह अपने वचनों से मुझे प्रोत्साहित करते हैं और वह सब कुछ करते हैं जो वह मेरे द्वारा करना चाहते हैं। विशेष रूप से, वह सुसमाचार और प्रार्थना में मेरा मार्गदर्शन करते हैं।

यह शानदार है!... उन्होंने आपको परीक्षा से उबारा है... आज के युवाओं को आप क्या कहना चाहेंगे?

कई बार, परमेश्वर की योजनाएँ हमेशा हमसे बेहतर होती हैं। भले ही हम इसे शुरुआत में नहीं समझ पाए, लेकिन अंत में यह बहुत अच्छा होगा। मुझे नहीं पता था कि मैं कैसी होती, अगर मुझे वह हॉस्टल लाइफ मिलती जो मैं चाहती थी। लेकिन प्रभु मुझे बहुतों के लिए एक उपयोगी बर्तन के रूप में उपयोग कर रहे हैं, जब उनकी इच्छा मेरे जीवन में पूरी हो जाती है। मैंने अपने उद्धार के दिन प्रभु से कहा, “भले ही मैं तुम्हें छोड़ दूँ, मुझे मत छोड़ना”, और मैंने अपने हाथों को पूरी तरह से परमेश्वर को उनकी इच्छा के लिए सौंप दिया। यदि आप भी उत्साह के साथ स्वयं को समर्पण करते हैं और प्रभु के लिए कुछ करने की इच्छा रखते हैं, तो वह निश्चित रूप से वह आपको बल देगा और आपका उपयोग करेगा।

प्यारे नौजवानों! भले ही सिस्टर एना रोज़लीन अक्सर गिरती और उठतीं, क्योंकि प्रभु उनके साथ थे, उन्होंने उनका हाथ पकड़कर उनका नेतृत्व किया और आज कई लोगों की सेवा करने के लिए उनका उपयोग कर रहे हैं। इसी तरह, जब आप परमेश्वर से आपके हाथ पकड़ने के लिए कहेंगे, तो वह भी आपका हाथ पकड़ेंगे और आपका मार्गदर्शन करेंगे। वह परीक्षाओं को दूर करने में भी आपकी मदद करेंगे और अपने पंखों के नीचे आपकी रक्षा करेंगे।

प्रभु जो चट्टान है हमारी सुरक्षा है!

ग्रीसी ग्यूपर (एपिनेफेलस तौविना) एक प्रकार की मछली है जो अपने दुश्मनों से बचने में चतुर है। ये मछलियाँ समुद्र के नीचे चट्टानों के बीच जाकर लेट जाती हैं। इस मछली को चट्टानों से अलग करना वास्तव में कठिन है क्योंकि यह बिल्कुल चट्टान की तरह दिखती है। इसका शिकार करने आए इसके शत्रु निराश होकर लौटते हैं! यह समुद्र में एक बार-बार होने वाली घटना है, और मछली नियमित रूप से चट्टानों के बीच दौड़ती है और आज तक बची रहती है!



इसी तरह, हमारे परमेश्वर ने मूसा की रक्षा की ताकि उसकी महिमा भी उसे नुकसान न पहुँचाए! उन्हें अपने बच्चों की सुरक्षा की बहुत चिंता है। एक चट्टान के रूप में, वह स्वयं को हमारी सुरक्षा और किले के रूप में रखता है। जब भी हम संघर्ष करते हैं, जब भी समस्याएँ हमारे सामने खड़ी होती हैं, उसकी उपस्थिति वहाँ होती है जहाँ हमें छिपने की आवश्यकता होती है!



आइए हम प्रार्थना करें और जीते!

सुलैमान राजा की प्रार्थना

वह देश जो दाऊद ने परमेश्वर के अनुग्रह से पाया था, सुलैमान के पास आ गया। सुलैमान द्वारा किया गया यह पहला अनुरोध था, जो जानता था कि वह अपनी अनुभवहीनता में इसे प्रबंधित नहीं कर सकता था और यह परमेश्वर की दृष्टि में प्रसन्न करने वाला था। वह एक प्रार्थना करने वाला राजा था। सुलैमान तब वह बीस वर्ष का भी न था जब राज्य करने लगा। वह परमेश्वर से बहुत प्यार करता है। उसने अपने पिता दाऊद की अच्छी सलाह मानी। परमेश्वर ने सुलैमान की निःस्वार्थ प्रार्थना सुनी जो उसने राष्ट्र के लिए की थी और परमेश्वर ने उसे उसके अनुरोध से परे आशीर्वाद दिया। हमें भी अपनी कठिन परिस्थिति में ऐसी निःस्वार्थ प्रार्थना करनी चाहिए। हमने अपनी जरूरतों के लिए बहुत प्रार्थना की है। अब हमें दूसरों के लिए, अपने अगुवों और सत्ता में बैठे लोगों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। “अब, हे मेरे परमेश्वर यहोवा, तू ने अपने दास को मेरे पिता दाऊद के स्थान पर राजा बनाया है, परन्तु मैं छोटा बालक हूँ; मुझे नहीं पता कि कैसे बाहर जाना है या अंदर आना है। और तेरा दास तेरी चुनी हुई प्रजा के बीच में है, वह तो बहुत बड़ी प्रजा है जिसकी गिनती नहीं हो सकती। इसलिये अपने दास को अपनी प्रजा का न्याय करने की समझ दे, कि मैं भले बुरे में परख कर सकूँ, क्योंकि तेरी इस बड़ी प्रजा का न्याय कौन कर सकता है? (1 राजा 3:7-9)। यह राजा सुलैमान की प्रार्थना थी।

✎ यह प्रार्थना आमतौर पर घर पर पढ़ने वाले बच्चों को सिखाई जाती है, यह सोचकर कि सुलैमान द्वारा मांगी गई बुद्धि केवल उन्हीं पर लागू होती है।

✎ लेकिन हम इस तथ्य से अंधे नहीं हैं कि जीवन में कई चुनौतियों का सामना करने वाले सबसे अनुभवी वयस्क भी कई बार नासमझी करते हैं।

✎ इसलिए बिना यह सोचे कि यह प्रार्थना केवल छोटे बच्चों की है जो पढ़ रहे हैं, यह उचित है कि परमेश्वर से हमारे दैनिक कार्यों को करने के लिए ज्ञान मांगें।

✎ इसका कारण यह है, “मसीह हमारी धार्मिकता, और पवित्रता, और परमेश्वर के द्वारा हमारा छुटकारा है” (1 कुरिन्थियों 1:31)। “उसी में बुद्धि और ज्ञान के सारे भण्डार छिपे हुए हैं” (कुलुस्सियों 2:3)।

पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज में, बुद्धि की खोज में और ‘मसीह जो बुद्धि है’ हमारी पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। ऐसी प्रार्थना का परिणाम न केवल बुद्धि है, बल्कि अन्य सभी चीजें हमें “अतिरिक्त” दी जाएंगी जैसे वे राजा सुलैमान को दी गई थीं।

प्रार्थना में न केवल ‘जो हम चाहते हैं और मांगते हैं’ दिया जाएगा, लेकिन परमेश्वर जानता है कि हमें क्या चाहिए, तो ‘जो हमने नहीं मांगा’ वह भी बहुतायत से दिया जाएगा। हमारा प्रभु यीशु मसीह ही वह है जो हमारी विनती और सोच से कहीं अधिक, बहुतायत से, सब कुछ करने में समर्थ है।

प्रिय युवाओं !

तुम जो हमारे प्रभु यीशु मसीह से प्रार्थना करते हो, सोचो कि क्या तुमने राजा सुलैमान की तरह मनभावन प्रार्थना की है





मैं कॉलेज के अंतिम (तीसरे) वर्ष में हूँ। मैं एक मसीही परिवार में पैदा हुआ था, बचाया गया और प्रभु के साक्षी के रूप में जी रहा था।

कर्फ्यू के दिनों में मैंने अपने मोबाइल फोन का अधिक उपयोग करना शुरू कर दिया और दिन में लगभग 5 से 6 घंटे अश्लील वीडियो देखना शुरू कर दिया। वह मेरा शौक था। अब कॉलेज जाने के बाद भी मैं इसे छोड़ नहीं पा रहा। मैं इसे देखने के बाद दोषी महसूस करता हूँ। मैं हर दिन अपने भीतर मर रहा हूँ। मेरे दुख को व्यक्त करने के लिए शब्द नहीं हैं। ऐसा लगता है कि कोई कह रहा है कि मैं बहुत बड़ा पाप कर रहा हूँ। हाँ! मैं जानता हूँ कि मैं जो कर रहा हूँ वह पापपूर्ण है। लेकिन मैं इससे उबर नहीं पा रहा। इससे मेरी पढ़ाई भी प्रभावित हो गई है। मैं अपने विषयों का भी ठीक से अध्ययन नहीं कर सका। क्या मेरे लिए इस पाप से बाहर आना संभव है? क्या यीशु मुझे आज़ाद करेगा? -शंकर, कन्याकुमारी।

प्रिय भाई शंकर, मैं आपके आंतरिक दर्द को महसूस कर सकता हूँ। मैं समझ सकता हूँ कि आप, जो बचाए गए हैं, पाप के द्वारा परमेश्वर को शोकांत करते हैं और इसके परिणामस्वरूप दोषी विवेक में प्रतिदिन पीड़ित होते हैं।

शंकर, जिस क्षण हम पाप से बाहर आना चाहते हैं, वास्तव में परमेश्वर उसके लिए रास्ता खोल देते हैं। यदि आप अपनी लत से बाहर आना चाहते हैं, तो वह आपको इससे मुक्त करेंगे और आपको स्वतंत्रता के साथ जीने और एक सफल जीवन जीने में मदद करेंगे। शंकर, कई बार हम उस जाल में पड़ जाते हैं जो शैतान हमारे लिए बिछाता है, बिना हमारी जानकारी के। पवित्रशास्त्र कहता है, “चोर किसी और काम के लिए केवल चोरी करने, और घात करने और नाश करने के लिए आता है” (यूहन्ना 10:10)। हमें इस बात से अवगत होना चाहिए कि वह हमारे जीवन में क्या चुराता है, घात करता है और नष्ट करता है। तभी हम सतर्क हो सकते हैं।



◀ पहली चीज जो वह हमारे जीवन से चुराता है वह है हमारी पवित्रता। युवाओं की ताकत उनकी पवित्रता है। जैसे ही शैतान इसे चुराता है, वे दोषी और थके हुए महसूस करते हैं।

◀ दूसरा, घात करना (घात करना)। वह उनके लिए परमेश्वर की सुंदर योजना को बिगाड़ देगा, उन्हें उस योजना के रास्ते से हटा देगा, और उन्हें सीधे विनाश के गलत रास्ते पर ले जाना शुरू कर देगा।

◀ तीसरा, वह हमसे पाप करवाएगा, हमें एक दोषी अंतःकरण में धकेलेगा, हमें झूठ बोलेंगे कि हम परमेश्वर की सन्तान नहीं हैं, और

हमें यह बताकर कि हम जीने के लायक बिल्कुल भी नहीं हैं, हमें उकसाएगा कि हम अपनी जान ले लें। आखिरकार, यह हमारी आत्मा है जो वह नष्ट करने का प्रयास करता है।

उसका लक्ष्य हमें, जो वास्तव में स्वर्ग के योग्य हैं, एक अनंत अधोलोक में भेजना है। उसका काम है चोरी करना, घात करना और

हम लोगों को नष्ट करना। परन्तु पवित्र शास्त्र कहता है, “सचेत रहो। तुम्हारा शत्रु शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खाए” (1 पतरस 5:8)। तो शंकर, इस तथ्य को जानकर, जब आप सतर्क रहेंगे, तो हम दुश्मन के मिसाइलों का आसानी से पता लगा सकते हैं और उन्हें नष्ट कर सकते हैं। वह दहाड़ने वाले सिंह की तरह है। लेकिन वह जो हमारे साथ है और हमारे भीतर है, वह यहूदा का सिंह है। उसकी दहाड़ के सामने दुश्मन कुछ भी नहीं है। उसकी योजना और जाल कुछ भी नहीं है। तो शंकर, यीशु आपको इस पाप से मुक्त करने के लिए शक्तिशाली हैं, आपको इस गुलामी से हमेशा के लिए मुक्ति दिलाते हैं,

आपको एक विजयी जीवन जीने में मदद करते हैं, और आपकी असफलता को जीत में बदल देते हैं।

आपको जो करने की आवश्यकता है वह यह है: यदि आप सच्चे हृदय से परमेश्वर से आपको क्षमा करने के लिए कहते हैं, तो वह आपके पापों को क्षमा करेगा और आपको स्वतंत्र करेगा। साथ ही आपको इस पाप को फिर से करने से बचाने के लिए कुछ बातों का पालन करना चाहिए।



पालन करने के लिए चीजें:

◀ रात 9:30 बजे के बाद मोबाइल फोन का इस्तेमाल करने से बचें।

◀ बेवजह इंटरनेट के इस्तेमाल से बचना ही बेहतर है।

◀ स्मार्ट फोन पर वेलबीइंग विकल्प का उपयोग करते हुए, जब आप प्रतिदिन YouTube, Instagram, Facebook आदि ऐस का उपयोग करने के लिए एक निश्चित समय निर्धारित करते हैं, तो आप निर्दिष्ट समय के बाद उस ऐप का उपयोग नहीं कर पाएंगे। इस तरह अपने आप को नियंत्रित करने और बचाने की कोशिश करें।

◀ जब भी आपको अपने मोबाइल को छूने की इच्छा हो, तो अपना ध्यान भटकाने के लिए खुद को कुछ अन्य शारीरिक गतिविधियों में शामिल करने का प्रयास करें।

◀ जब भी आप अपने आप को आध्यात्मिक रूप से मजबूत करें, ऐसी इंटरनेट समस्याओं से बचने के लिए अपनी प्रार्थना और शास्त्र पढ़ने को बढ़ाने की कोशिश करें।

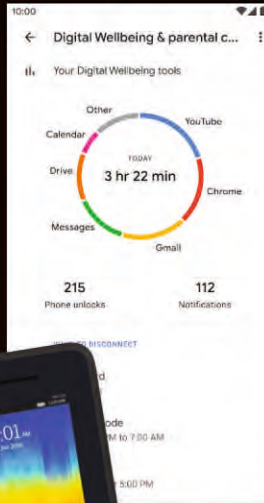
◀ अपने मोबाइल फोन पर कभी भी बाइबल न पढ़ें। कुछ दिनों के लिए YouTube पर संदेश सुनने से भी बचें। क्योंकि संदेश को सुनने के बाद एक मौका है कि आपकी जानकारी के बिना आपको कुछ और चीजें देखने को मिलेंगी।

◀ यदि आप अपने स्मार्ट फोन का उपयोग करने से नहीं बच सकते हैं, तो सामान्य नोकिया बटन फोन का उपयोग करना सबसे अच्छा है। बाइबल कहती है, यदि तुम्हारी आंखें पाप करती हैं, तो तुम्हारा सारा शरीर अंधेरा हो जाएगा। पाप करके दो आँखें होते हुए नरक में जाने से काना होकर स्वर्ग जाना अच्छा है!

यूहन्ना अध्याय 5 में, उस व्यक्ति को जो 38 वर्ष से बीमार था, चंगा करने के बाद, यीशु ने फिर मन्दिर में उसकी ओर देखा और कहा, “देख, तू चंगा हो गया है।

फिर पाप न करना, कहीं ऐसा न हो कि इससे भी बड़ी विपत्ति तुझ पर आ पड़े।” परमेश्वर द्वारा आपको इस पाप से मुक्त करने के बाद, आप इस पाप पर तभी विजय प्राप्त कर सकते हैं जब आप विवेकपूर्ण और जिम्मेदारी से कार्य करेंगे। साथ ही, आप एक आध्यात्मिक सलाहकार बन सकते हैं जो आपके जैसे कई युवाओं की मदद करता है जो इस पाप में फंस गए हैं। प्रार्थना करें और कार्य करें।

किशोरावस्था आपको सीमाओं से बाहर निकलने, पंख फड़फड़ाने और उड़ने के लिए आकर्षित करती है। सतर्कता नहीं तो आप कैद हो जाओगे !!



“राष्ट्रीय कैंसर जागरूकता दिवस” - 7 नवंबर

विश्व कैंसर दिवस हर साल 4 फरवरी को मनाया जाता है। कैंसर का जल्द पता लगाने और इलाज पर जोर देने के लिए देश भर में हर साल 7 नवंबर को “विश्व कैंसर जागरूकता दिवस” मनाया जाता है। यह एक वैश्विक पहल है। यह लाखों जिंदगियों को मौत से बचाता है। कैंसर छूट की बीमारी नहीं है। हालांकि, कई कैंसर रोगियों को फैलने की संभावना के कारण अलग-थलग कर दिया जाता है। इसके कारण कई रोगी अपनी मानसिक शक्ति और आशा खो देते हैं।

हमारे देश में प्रतिदिन 1300 लोग कैंसर से मरते हैं। 2018 में 11.50 लाख नए मरीजों का निदान किया गया। आंकड़े बताते हैं कि देश भर में 22.50 लाख लोग कैंसर के साथ जी रहे हैं। स्तन कैंसर, मुंह का कैंसर, सर्वाइकल कैंसर और फेफड़ों का कैंसर हमारे देश में सबसे आम हैं। प्रारंभिक अवस्था में इसका पता लगाकर और उचित उपचार प्रदान करके कैंसर को पूरी तरह से ठीक किया जा सकता है। इसके लिए लोगों में जागरूकता पैदा करना बेहद जरूरी है। आंकड़े बताते हैं कि तंबाकू और धूम्रपान उत्पादों को पूरी तरह से नियंत्रित करने से अगले 10 वर्षों में लोगों की औसत जीवन प्रत्याशा बढ़ जाती है। डॉक्टरों का कहना है कि अस्वस्थ खाने की आदतें निश्चित रूप से कैंसर के खतरे को बढ़ा सकती हैं।

रक्षक



आज की आधुनिक दुनिया में कोई भी आसानी से इस बात की गारंटी नहीं दे सकता है कि वे घर छोड़ देंगे और सुरक्षित लौट आएंगे क्योंकि ऐसे कई खतरे हैं जो हर दिन के जीवन में मानव जाति को निशाना बनाते हैं। एक तरफ महामारी और दूसरी तरफ दुर्घटनाएं, हत्याएं हैं। भारत दुनिया में सड़क दुर्घटनाओं में सबसे अधिक मौतों वाले देशों की सूची में शीर्ष पर है। केंद्र सरकार के मुताबिक हमारे देश में हर साल 4 लाख से ज्यादा सड़क हादसे होते हैं। भले ही हमारे चारों ओर असुरक्षित परिस्थितियां हों, सुरक्षा प्रदान करने वाला प्रभु हमारे साथ है और वह हमारी रक्षा कर रहा है। परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा, ".... अब्राम, मत डर। मैं तेरी ढाल, तेरा अत्यंत बड़ा प्रतिफल हूँ" (उत्पत्ति 15:1) और न केवल परमेश्वर ने इब्राहीम को बुलाया, बल्कि 170 वर्षों तक उसकी रक्षा भी की।

परमेश्वर हमेशा अपने बच्चों की रक्षा करते हैं। वह उन लोगों को कभी नहीं छोड़ते जो उन पर भरोसा करते हैं। वह परमेश्वर है जो हमारे साथ होकर रक्षा करता है चाहे हम कितने ही खतरों का सामना करें। जिन दिनों साधु सुंदर सिंह पंजाब, नेपाल और तिब्बत में सेवा करते थे, लोग उन्हें स्वीकार नहीं करते थे और उन्हें भगा देते थे। लोगों द्वारा भगाए जाने पर, वह पर्वतों और पहाड़ियों में रहते थे। एक सुबह जब वह उठे तो उन्होंने गुफा में अपने बगल में एक तेंदुए को सोते हुए



पाया, जहाँ वह ठहरा हुए थे। वह बिना किसी हंगामे के वहाँ से चले गए। जब वे खड़े हुए तो किसी चीज के होने का आभास किया। उन्होंने एक बड़े साँप को रेंगते देखा। इस प्रकार परमेश्वर पर भरोसा करके पहाड़ों और गुफाओं में लेटे साधु सुंदर सिंह को प्रभु ने तेंदुए के मुँह और साँप के दाँत से बचा लिया।

यद्यपि पिछले दो वर्षों में कोरोना महामारी के कारण बहुत से लोगों ने अपनी जान गंवाई है, फिर भी यहोवा ने वचन के अनुसार पलक की तरह जो आँख को बचाती है, आपकी और मेरी रक्षा की है, "तेरे निकट में हजार, और तेरी दाहिनी ओर दस हजार गिरेंगे; परन्तु वह तेरे निकट न आएगा" (भजन संहिता 91:7)।

चाहे कितनी ही बार शैतान आपके जीवन में गरजते हुए शेर की तरह उठ खड़ा हो और आपको पाप, मानवीय षड़यंत्रों और धूर्त धोखे में गिराने की कोशिश करे, डरो मत। यहोवा जिसने दानियेल को सिंहों के मुँह से बचाया है, वह सब विपत्ति से तेरी रक्षा करेगा। सिंह दूसरे जानवरों का शिकार करने और उन्हें खाने के लिए जाने जाते हैं। जब उन्हें भूख लगती है, तो वे शांत रहते हैं और अन्य जानवरों को अपने क्षेत्र में आते देखते हैं। जब शिकार जानवर उनकी सीमा के

भीतर होते हैं, तो वे उन्हें डराने के लिए दहाड़ते हैं। वे डरे हुए जानवरों का शिकार करने और अपनी योजना को अंजाम देने के लिए दूसरे सिंहों की मदद लेते हैं।

जब दानियेल को जिनका ऐसा स्वभाव था, सिंहों की माँद में



फेंक दिया गया, तब उन्होंने न तो गरजकर उसे डराया, और न दूसरे सिंहों को उसका सत्यानाश करने के लिये पुकारा। क्या आपको आश्चर्य है क्यों? वचन कहता है कि, यहोवा ने दानियेल की रक्षा के लिये सिंहों के मुंह को बन्द कर दिया। “मेरे परमेश्वर ने अपना दूत भेजकर सिंहों के मुंह को ऐसा बन्द रखा कि उन्होंने मेरी कुछ हानि न की” (दानियेल 6:22)। चाहे शैतान तुम्हारे विरुद्ध कितने भी लोगों को खड़ा करे, डरो मत या निराश मत हो। यहोवा ने दानियेल की रक्षा क्यों की, इसका कारण यह था, “...दानियेल गड़हे में से निकाल लिया गया, और उस



पर चोट का कोई निशान न पाया गया, क्योंकि वह अपने परमेश्वर पर विश्वास रखता था” (दानियेल 6:23)। जब आपको दानियेल की तरह विश्वास है कि, “चाहे कितने भी लोग मुझे नष्ट करने के लिए उठें, मेरी रक्षा करने वाला परमेश्वर मेरे साथ है”, तो आप निश्चित हो सकते हैं कि आपको कोई नुकसान नहीं होगा।

विश्वास करें कि आपकी रक्षा करने वाला प्रभु आपके साथ है। तब आपकी रक्षा होगी। यदि आप चाहते हैं कि आपका विश्वास बढ़े, तो आपको प्रतिदिन ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए।

दानियेल रीति के अनुसार दिन में तीन बार परमेश्वर से प्रार्थना किया करता था, यहां तक कि उस समय भी जब उन्होंने यह आज्ञा दी थी, कि उसे प्रार्थना नहीं करनी चाहिए। यह वह प्रार्थना थी जिसने उनके विश्वास को बढ़ाया और उस विश्वास ने उनकी रक्षा की।

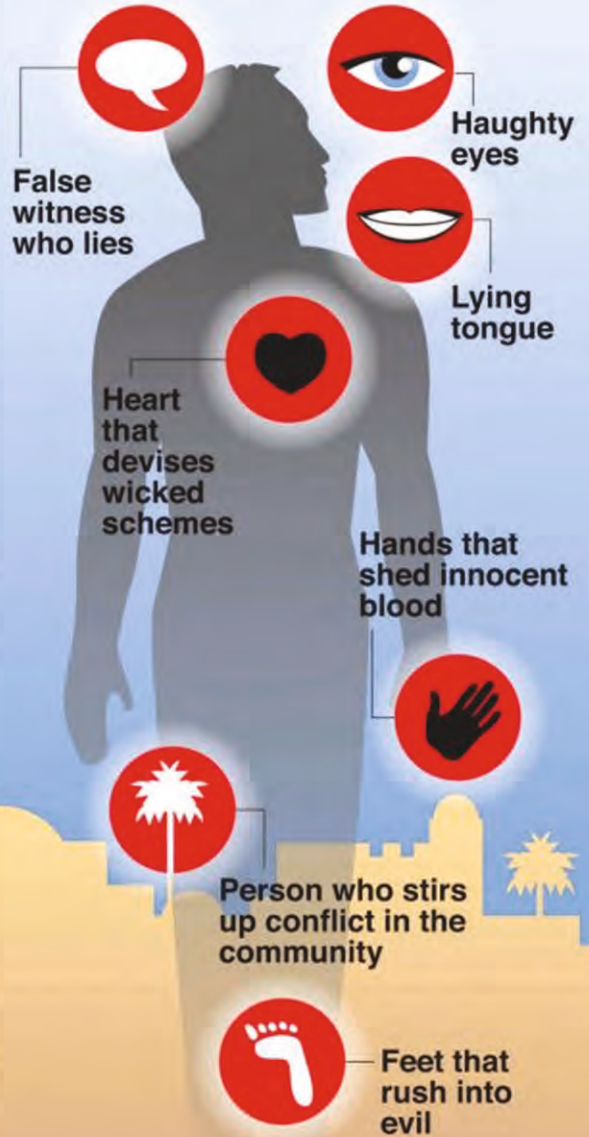
जब आप हर सुबह प्रभु से प्रार्थना करते हैं, इससे पहले कि आप इस दुनिया में प्रवेश करें, चाहे आपके खिलाफ कुछ भी हो जाए, यह विश्वास कि, “यीशु मेरी रक्षा करेगा” आपको बढ़ाता है।

मेरे प्यारे नौजवानों! विश्वास करें कि केवल यीशु ही इस दुनिया में आपकी रक्षा कर सकते हैं जो प्रतिद्वंद्विता, ईर्ष्या और खतरे से भरी हुई है। क्योंकि “वह अपने सब भरोसा रखने वालों की ढाल है” (भजन संहिता 18:30)।

कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपके बीच कितनी खतरनाक स्थिति है, आपको बस इतना करना है कि यीशु मसीह पर भरोसा रखें “भगवान आप मेरी शरण हैं, मेरा किला, मेरा आश्रय” और आप उनके द्वारा सुरक्षित रहेंगे।

7 Things God Hates

Proverbs 6:16–19



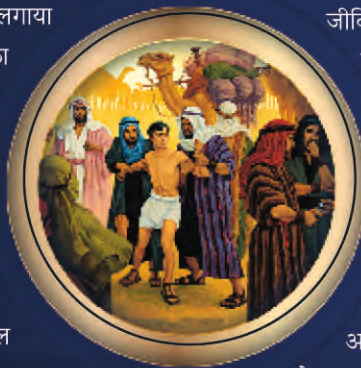


दयालुता

उत्पत्ति अध्याय 50 में हम यूसुफ के बारे में पढ़ते हैं। जब यूसुफ 17 वर्ष का था, तब उसने सपना देखा। उसने बड़े आनन्द के साथ सपने के विषय में अपने पिता को बताया। लेकिन इस बात ने उसके अपने भाइयों के क्रोध को आकर्षित किया, जो उससे घृणा करते थे और उसे मारने की योजना बना रहे थे। हालाँकि, उन्होंने उसे एक दास के रूप में बेच दिया और उसे मिस्र ले जाया गया। यूसुफ, जो एक गुलाम के रूप में मिस्र देश में आया था, उस पर झूठा आरोप लगाया गया, उसे जेल में डाल दिया गया, और कई कष्टों का सामना करना पड़ा। यूसुफ लगभग 13 वर्षों तक पीड़ा में रहा और उसके जीवन के सभी कष्टों का कारण उसके भाई थे। परन्तु इन सब कष्टों के बाद, यहोवा ने यूसुफ को मिस्र देश में सर्वोच्च अधिकारी के रूप में नियुक्त किया। उसे देश का प्रभारी बनाया गया और उसे फिरौन के बाद के पद पर पदोन्नत किया गया। इस समय, एक बड़ा अकाल था, और मिस्र ही एकमात्र स्थान था जहाँ भोजन उपलब्ध था। यूसुफ के भाई भोजन खरीदने के लिए मिस्र आए थे। वहाँ उन्होंने यूसुफ को पूरे मिस्र के प्रभु के रूप में पाया। इस अवधि के दौरान, यूसुफ का पिता जीवित था, लेकिन कुछ समय बाद पिता की मृत्यु हो गई। अपने पिता की मृत्यु के बाद, यूसुफ के भाइयों को डर था कि वह उनसे बदला लेगा। उन्होंने कहा “आज वह एक महान अधिकार वाला व्यक्ति

है; क्या होगा यदि वह सभी नुकसानों के लिए जो हमने उसका किया है, हमसे बदला लेने की योजना बना रहा हो तो?”

परन्तु यूसुफ ने उन से कहा, मत डरो, क्या मैं परमेश्वर की जगह पर हूँ? परन्तु तुम ने मेरी हानि की इच्छा तो की, परन्तु परमेश्वर ने भलाई ही चाहा, कि जैसा आज है वैसा ही हो जाए, कि बहुत से लोगों को जीवित बचाए; इसलिये अब मत डर, मैं तुम्हारा और तुम्हारे बाल बच्चों का पालन पोषण करूँगा। और उस ने उन्हें शान्ति दी, और उन से मधुर बातें की” (उत्पत्ति 50:19-21)। परमेश्वर चाहता है कि हम वैसे ही बनें। आपको उन लोगों से प्यार से बात करनी चाहिए जिन्होंने आपको नुकसान पहुंचाया है, आप पर अत्यधिक दोषारोपण किया है, आपके घर में अच्छी चीजों को होने से रोका है, आपके तरक्की को रोका है। क्या हम ऐसा कर सकते हैं?



लेकिन यूसुफ को देखिए। उसने उनसे प्यार से बात करते हुए कहा, “तुम किससे डरते हो? मैं यहाँ तुम्हारे बच्चों की देखभाल करने के लिए हूँ।” उन्होंने करुणा से अपने भाइयों को आश्चस्त किया। आइए हम अपने आप को देखें कि क्या हमारे अंदर वह स्वभाव है।



जब ऐसे महान गुण हमारे अंदर नहीं होते हैं तो घर में शांति अभाव होता है, और झगड़े, परेशानी, असहज स्थिति और शलुता होती है। कई बार हम प्यार से बोलना भूल जाते हैं और बदले में गुस्से में बोलते हैं। और फिर हम परमेश्वर के पास दौड़ते हुए क्षमा याचना करते हुए कहते हैं, “परमेश्वर, मुझे इस तरह से नहीं बोलना चाहिए था; मुझे उस तरह से व्यवहार नहीं करना चाहिए था, मुझे दयालुता और करुणा से बोलना चाहिए, कृपया मुझे ऐसा करने का अनुग्रह दें, कृपया मुझे वह स्वभाव दें”। कुछ लोग कहते हैं “कृपया मुझे क्षमा करें, कृपया मेरी सहायता करें”। हमें ऐसा कहने वालों के प्रति दयालु होने की जरूरत है।



एक निश्चित परिवार था जो बहुत सारी संपत्ति और संपत्ति के साथ समृद्ध जीवन व्यतीत करता था। इनके एक बेटा था। विशाल धन और संपत्ति की हड़पने के लिए, उनके रिश्तेदारों ने उसके माता-पिता को मार डाला और सारी संपत्ति अपने लिए ले ली। यह बच्चा अनाथ हो गया है।

उन्हीं रिश्तेदारों ने उसे अनाथालय में डाल दिया। जब लड़का बड़ा हुआ, तो वह अपने गाँव के एक व्यक्ति से मिला, जिसने उसे उसी के ही रिश्तेदारों द्वारा धन को जब्त करने के लिए उसके माता-पिता की हत्या का सच बताया। आदमी ने कहा की “वे ही आपके जीवन को अनाथ करने का कारण हैं”। लड़का भड़क गया। उसने अपने जीवन में एक निर्णय लिया। “मैं अपने रिश्तेदारों से बदला लूंगा जिन्होंने मेरी संपत्ति और धन को चुरा लिया और मेरे माता-पिता को मार डाला”, उसने उन्माद के साथ कसम खाई। जब वह एक युवा बालक के रूप में बढ़ा, तो उसके पास एक बड़ा चाकू था और वह उन लोगों की तलाश में था, जिन्होंने उसके माता-पिता को मार डाला था और उसकी संपत्ति चुरा ली थी, ताकि वह उन्हें मार सके और बदला ले सके।

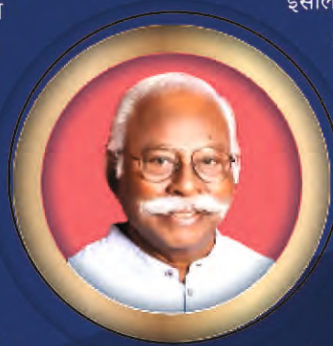
उसी समय एक दिन उसे यीशु के बारे में बताया गया। जैसे ही उसने यीशु के लिए अपने हृदय में स्थान दिया, उसका कठोर हृदय कोमल हो गया। उसके ऊपर एक महान परिवर्तन आया। उसने यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया और एक नया जीवन जीना शुरू किया। कुछ साल बाद, वह एक और आदमी से मिला, जिसने उसे उन लोगों के ठिकाने के बारे में बताया, जिन्होंने उसके माता-पिता को मार डाला था। वह तुरंत उनसे मिलने के लिए निकल पड़ा, कम से कम यह जानने के लिए कि उन्होंने उसके माता-पिता को क्यों मारा था।

परन्तु जब वह वहाँ गया, तो उन को कंगाली में पाया, और उनके पास खाने को कुछ नहीं। जब लड़के ने उन्हें इतनी बुरी हालत में पाया, तो उसे गुस्सा नहीं आया कि उन्होंने उसके माता-पिता को मार डाला।

उसका गुस्सा गायब हो गया और वह करुणा से भर गया। वह तुरंत पास की एक दुकान पर गया और उनके लिए खाना, कपड़े और कुछ फल खरीदे। वह इन सामानों को लेकर उनके घर चला गया। उन्होंने उससे पूछा, “तुम कौन हो?” उसने उत्तर दिया, “मैं उसी गाँव से हूँ जहाँ से तुम आए हो, और मैं तुम्हें देखने आया हूँ। मैंने तुम्हारे लिए कुछ भोजन, कपड़े और फल खरीदे हैं”।

उन्होंने पूछा “कौन हो बेटा? हम तुम्हें पहचान नहीं पा रहे हैं, यद्यपि तुम कहते हो कि तुम हमारे ही गाँव के हो? उसने उन्हें अपने माता-पिता के नाम बताए, और वे अचंभे में पड़ गए। उसने उनसे पूछा, “क्या तुम मुझे पहचानें? मैं इतने सालों से आपकी तलाश कर रहा था और अब मुझे पता चला कि आप यहाँ रहते हो।

इसलिए मैं आपसे मिलने आया हूँ। उसने आगे कहा, ‘मैं अपने माता-पिता की हत्या का आपसे बदला लेना चाहता था, लेकिन एक दिन यीशु ने मुझसे मुलाकात की और मेरे कठोर हृदय को नया कर दिया। इसलिए आपको दरिद्रता में जीवन व्यतीत करते देखकर मुझे दया आ गई। मैंने तुम्हारे लिए ये कपड़े और कुछ फल खरीदे हैं। अतीत के बारे में भूल जाओ। यीशु ने मेरा जीवन बदल दिया, और यदि आप उसे स्वीकार करते हैं, तो आप खुशी से भर जाएंगे।



यह युवा बालक भाई नवनीतन, परमेश्वर के एक सेवक हैं जो एफएमपीबी सेवकाई में काम कर रहे हैं। उनके जीवन में घटी एक सच्ची घटना है। यीशु उस दया और करुणा का कारण है। हमें भी दूसरों के प्रति दया और कृपा दिखाने का प्रयास करना चाहिए। यीशु मसीह दूसरों के प्रति दयालु थे। हमें परमेश्वर से दूसरों के प्रति उसी करुणा से भरने के लिए मांगना चाहिए। आइए हम ऐसा हृदय मांगें जो दूसरों के प्रति दया और करुणा से भरपूर हो, और परमेश्वर उसे प्रदान करेगा।

प्रिय नौजवानों! हो सकता है कि आप भी जीवन के कठिन रास्ते से गुजर रहे हों। निराश मत हो... दूसरों के प्रति भले और दयालु बनो! आपके लंबे समय के सपने निश्चित रूप से सच होंगे!

सफलता के लिए एक खोज।

KOBE

BRYANT



कोबे ब्रायंट का जन्म 23 अगस्त, 1978 को अमेरिका के पेंसिल्वेनिया में हुआ था। ब्रायंट के पिता एक प्रसिद्ध पूर्व (एनबीए) बास्केटबॉल खिलाड़ी थे। पिता के सेवानिवृत्ति होने के बाद परिवार इटली शिफ्ट हो गया। ब्रायंट को 3 साल की उम्र से ही बास्केटबॉल के लिए बहुत उत्साह था। अपनी कम ऊंचाई के कारण, वह केवल देख सकता था और प्रशंसा कर सकता था, पर खेल नहीं सकता था। ब्रायंट की दो बहनों ने उन्हें फुटबॉल और बास्केटबॉल दोनों में एक उत्कृष्ट खिलाड़ी बनाया है। जैसे-जैसे ब्रायंट बड़े होते गए बास्केटबॉल के लिए उनका जुनून और प्रतिभा बढ़ने लगी। उन्हें बास्केटबॉल का जुनून था। उन्होंने न केवल इच्छा का पोषण किया, बल्कि इसके लिए प्रयास और अभ्यास भी करने लगे। उनका परिवार 1991 में पेंसिल्वेनिया लौट आया। जहाँ वह लाया मेरियन हाई स्कूल में बास्केटबॉल टीम में शामिल हो गए। उनकी कड़ी मेहनत के कारण चार साल की राज्य चैंपियनशिप हुई। वह गंभीरता से खेलने लगा। हाई स्कूल में उच्च एसएटी (स्कॉलैस्टिक असेसमेंट टेस्ट) स्कोर के बावजूद, उन्होंने कॉलेज छोड़ने का फैसला किया और एनबीए में शामिल होने की पहली महत्वाकांक्षा के साथ कठिन प्रशिक्षण लिया। ब्रायंट ने 1996 एनबीए ड्राफ्ट के लिए घोषित किया और शार्लट हॉर्नेट्स द्वारा सर्वसम्मति से चुना गया। उसके बाद लेकर्स के साथ उन्होंने व्यापार किया।

ब्रायंट को 1998 में 19 साल की उम्र में अपने दूसरे सीज़न में "ऑल-स्टार" के रूप में नामित किया गया था, जो

सफलता के लिए कमर कस रहे सभी युवा विजेताओं को प्यार का सलाम! सफलता की राह में पहला कदम सफलता की अधिक ऊंचाइयों तक पहुंचने के लिए अपने आरम के क्षेत्र से बाहर निकलना है। अगला कदम यह है कि आप अपनी सफलता के रास्ते में आने वाली नकारात्मक स्थितियों को पार करना सीखें। एक व्यक्ति जो उड़ान भरता रहता है उसके रास्ते में चाहे कितनी भी बाधाएँ क्यों न आएँ, वह निश्चित रूप से सफलता के उच्च स्थान पर पहुँचता है। यहाँ एक विजेता का जीवन है, जो आपको उड़ान भरने के लिए प्रेरित करेगा कि आप सफलता के आपके लक्ष्य तक पहुँच सकें।

इसे प्राप्त करने के लिए एनबीए के इतिहास में सबसे कम उम्र का था। अपने उत्कृष्ट बास्केटबॉल कौशल का प्रदर्शन जारी रखते हुए, उन्हें 2008 में "सबसे मूल्यवान खिलाड़ी" (एमवीपी) नामित किया गया था। उन्होंने 2008 और 2012 के ओलंपिक में संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए खेला और दोनों स्पर्धाओं में स्वर्ण पदक जीता।

2013 में, उन्हें एक्सीस टेंडन फट गया था। इससे 2013-2014 के टूर्नामेंट में खेलते समय घुटने में क्रैकचर हो गया था। खेलना जारी रखने की कोशिश के दौरान गंभीर चोट के कारण वह नहीं खेल पाए। उन्होंने अपनी सेवानिवृत्ति की घोषणा तब की जब यह स्पष्ट हो गया कि वे अब बास्केटबॉल नहीं खेल सकते। उन्होंने अपने खेल जीवन के 20 वर्षों में अपनी प्रतिभा और कड़ी मेहनत से पांच एनबीए खिताब जीते। उन्होंने सिर्फ खिताब ही नहीं बल्कि प्रशंसकों का दिल भी जीता।

ब्रायंट के महान प्रयासों ने उन्हें स्कूलों की मदद करने के लिए सभी खिलाड़ियों के साथ एक चैरिटी ट्रस्ट बनाने के लिए प्रेरित किया। उसने हर साल समर कैप का आयोजन किया।

अप्रत्याशित रूप से, 26 जनवरी, 2020 को एक हेलीकॉप्टर दुर्घटना में उनकी जान चली गई। बचपन से ही उनमें जो दृढ़ता थी, उसने उन्हें बास्केटबॉल खिलाड़ी बना दिया, जिसकी आज हर कोई प्रशंसा करता है।

मेरे प्यारे नौजवानों!!! केवल इच्छा आपके लक्ष्य को प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त नहीं करेगी। व्यक्ति को कई चीजों का त्याग करने की जरूरत होती है, एक कठिन लड़ाई लड़नी होती है और सबसे महत्वपूर्ण, अंत तक प्रयासों में बने रहना होता है। ऐसा करने से आप एक दिन सफलता की बुलंदियों को छू सकेंगे। उड़ने के लिए तैयार हो जाइए, सफलता के सार में सांस लेने के लिए !!





योना

परमेश्वर की इच्छा से दूर भागना।

प्रिय नौजवानों! इस महीने, आइए हम पाँचवीं छोटी भविष्यवाणी पुस्तक "योना की पुस्तक" पर एक संक्षिप्त नज़र डालें।

परिचय :

योना दिखाता है कि अन्य जातियों लोगों के प्रति प्रेम न दिखाना परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने में एक बाधा है। इसके अलावा योना दर्शाता है कि, परमेश्वर दयालु है और हर उस व्यक्ति को मुक्ति प्रदान करता है जो पश्चाताप करता है और वह सभी मानव और प्रकृति पर शासन करता है।

लेखक: योना।

समय अवधि: 793-753 ई.पू.

अध्याय: 4.

पद: 481.

शब्द: 1,321।

प्रमुख व्यक्ति: योना।

योना में मसीह।

* योना यीशु के पुनरुत्थान का प्रतीक है और उसे राष्ट्रों के भविष्यद्वक्ता के रूप में चित्रित किया गया है (मत्ती 12:40)।

* यीशु मसीह को योना के जीवन में उद्धारकर्ता और परमेश्वर के रूप में देखा जा सकता है (2:9)।

योना का सारांश:

योना का भागना।

भागने का कारण (1:1,2 पद)।

पथ से भागना (1:3 पद)।

भागने का परिणाम (1:4-17 पद)।

योना का उपदेश:

प्रचार करने के लिए परमेश्वर की आज्ञा (3:1-3 पद)।

योना के उपदेश का सारांश (3:4 पद)।

योना के उपदेश का परिणाम (3:5-10 पद)।

योना की प्रार्थना:

प्रार्थना की विशेषताएं (2:1-9 पद)।

प्रार्थना का उत्तर (2:10 पद)।

योना की समझ:

योना की परमेश्वर से शिकायत (4:1-3 पद)।

योना के लिए परमेश्वर की पाठ योजना (4:4-11 पद)।

माल्टा द्वीप पर सांप से पौलुस रक्षा ।

पौलुस और जो उसके साथ बन्दीगृह में थे, इटली की ओर जा रहे थे कि उन पर बड़ी आँधी आई और वे भारी वर्षा में फँस गए। उन्होंने बचाए जाने की सारी आशा खो दी (प्रेरितों के काम 27)। वे इस खतरे से बच निकले और माल्टा द्वीप पर पहुँचे जहाँ एक साँप ने पौलुस के हाथ को काट लिया। चूँकि पौलुस ने देखा था कि कैसे परमेश्वर ने उसे एक बड़े खतरे से उसे बचाया था, उसने तो स्थिति के बारे में चिंता की और न इस बारे में चिंता की कि साँप कितना जहरीला था। वह परमेश्वर के वचन पर आश्वस्त था। इसलिए वह अपने विश्वास से पीछे नहीं हटा और आसपास के लोगों ने सोचा कि वह गिरकर मर जाएगा। लेकिन पौलुस सामान्य था। उसने प्राणी को आग में झटक दिया और उसे कोई हानि नहीं हुई। वे उम्मीद कर रहे थे कि वह सूज जाएगा या अचानक गिरकर मर जाएगा। परन्तु जब वे बहुत देर तक उसकी बाट जोहते रहे, और देखा कि उसे कुछ हानि नहीं पहुँची, तो अपना विचार बदल दिया, और कहा, कि वह देवता है (प्रेरितों के काम 28:1-6)। उसके विश्वास की दृढ़ता ने रक्त से मिले जहर की शक्ति को तोड़ दिया। जहर उसके खून में काम नहीं कर सका और नष्ट हो गया।



प्रिय युवाओं! पौलुस ने बहुत सी परीक्षाओं, खतरों और विरोधों का सामना किया, परन्तु यीशु ने इन सब में उसकी रक्षा की। यहाँ तक कि एक घातक स्थिति में जब साँप ने मारा था, यीशु ने उसकी रक्षा की। परमेश्वर आपकी भी रक्षा करेंगे !!

जंगल में इस्राएल के लोग की रक्षा...

जब इस्राएली कनान देश को जा रहे थे, तब फिरौन ने उनका पीछा किया। तब इस्राएली अपने पीछे फिरौन के आने से डर गए, "और जब फिरौन निकट आया, तब इस्राएलियों ने आँखें उठा कर क्या देखा, कि मिस्री हमारा पीछा कर रहे हैं; सो वे बहुत डर गए, और इस्राएलियों ने यहोवा को पुकार" (निर्गमन 14:10)। यहाँ तक कि जब फिरौन की सेना इस्राएलियों का पीछा कर रही थी, तब मूसा ने यहोवा की दोहाई दी। और यहोवा ने इस्राएल के लोगों को उनके संकट में मार्गदर्शन दिया और उन्हें इस तरह की प्रतिज्ञा दी, "मिस्रियों के लिए जिन्हें तुम आज देखते हो, फिर कभी नहीं देखोगे। यहोवा तुम्हारी ओर से लड़ेगा, और तुम अपनी शांति बनाए रखोगे" (निर्गमन 14:13,14)। जब फिरौन की सेना ने इस्राएली सेना का पीछा किया, तो बादल के खम्भे और आग के खम्भे ने आश्चर्यजनक रूप से परमेश्वर के बच्चों को उनसे बचाया। "उसने बादल के खम्भे को दिन में और आग के खम्भे को रात में लोगों के आगे से दूर न किया" (निर्गमन 13:22)। इस प्रकार यहोवा ने अपने लोगों के लिए युद्ध किया, उनकी रक्षा की और समुद्र के बीच सूखी भूमि पर उनकी अगुवाई की। वह एक अदभुत परमेश्वर है। वह चमत्कार करते हैं जिसकी आपने कभी कल्पना नहीं की थी, इसलिए चिंता न करें, परमेश्वर पर निर्भर रहें। बिना हार माने उस पर भरोसा रखें।



प्रिय नौजवानों! इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप किस प्रकार के संकट या असुरक्षित स्थिति में हैं, जब आप यीशु को पुकारते हैं, वह आपकी रक्षा करेंगे, जैसे उसने इस्राएल के लोगों को फिरौन के हाथ से बचाया था।



सिंहों की मांद में दानिय्येल की रक्षा।

राज्य के सभी राज्यपालों और क्षत्रपों ने दानिय्येल को हानि पहुँचाने की साज़िश रची। राजा ने भी उसे सिंहों की मांद में डालने का आदेश दिया। फिर भी परमेश्वर विश्वासयोग्य था दानिय्येल को बुराई से बचाने के लिए।

बिहान को राजा सवेरे उठा, और झट से सिंहों की मांद में गया, और पूछा, हे दानिय्येल, हे जीवते परमेश्वर के दास, क्या तेरा परमेश्वर जिसकी तू नित्य उपासना करता है, तुझे सिंहों से बचा सका है? (दानिय्येल 6:20)। तब दानिय्येल ने राजा से कहा, "हे राजा, तू युगयुग जीवित रहे! मेरे परमेश्वर ने अपना दूत भेजकर सिंहों के मुँह को ऐसा बन्द कर दिया, कि उन्होंने मेरी कुछ हानि न की,

क्योंकि मैं उसके साम्हने निर्दोष निकला या; और हे राजा, मैं ने तेरे साम्हने भी कुछ गलत नहीं किया" (दानिय्येल 6:21,22)। दानिय्येल के परमेश्वर ने उसकी रक्षा की। उसने न केवल दानिय्येल के दोस्तों की रक्षा की, जिन्हें जलती भट्टी में फेंक दिया गया था, बल्कि वह वहाँ सिंहों की मांद में दानिय्येल के साथ था और उसे सुरक्षित रखा।



प्रिय नौजवानों! परमेश्वर ने दानिय्येल की निरन्तर प्रार्थना के कारण उसकी रक्षा की। आपने भी सिंहों की मांद का अनुभव किया होगा। हो सकता है कि आपको कुछ चोटें भी आई हों। परमेश्वर को पुकारो। जिसने दानिय्येल की रक्षा की वह निश्चित रूप से आपकी भी रक्षा करेगा !!

मछली के पेट में योना की रक्षा।

परमेश्वर ने योना से कहा, "उस बड़े नगर नीनवे को जा और उसके विरुद्ध प्रचार कर, क्योंकि उसकी दुष्टता मेरी दृष्टि में बढ़ गई है"। लेकिन योना को कोई दिलचस्पी नहीं थी, वह नीनवे के विपरीत दिशा में जाने वाले एक जहाज पर सवार हो गया। और यहोवा ने समुद्र में प्रचण्ड आन्धी चलाई, और समुद्र में बड़ी प्रचण्ड आँधी चली, यहाँ तक कि जहाज टूटने पर था (योना 1:4)। यहोवा ने योना पर, उस जहाज पर, जिस पर वह चलता था, और उसके संगी जनों पर प्रचण्ड आन्धी भेजी। परमेश्वर ने इसे जहाज के टूटने, उनकी याता में बाधा डालने, और उनके उद्देश्य के अधूरे रहने की अनुमति दी। उसने उसे पीड़ित किया। उस ने उस पर गेहूँ छानने के समान संकट डाला। उस दिन योना आँधी में फँस गया और उसे बहुत क्लेश और यातनाएँ सहनी पड़ीं। योना ने जहाज के लोगों से कहा कि वे उसे समुद्र में फेंक दें और वह फिर शांत हो जाएगा। लेकिन वे नहीं माने और समुद्र पहले से ज्यादा वीरान हो गया। इसलिए, उन्होंने अंत में योना को समुद्र में फेंक दिया। समुद्र का कोप तुरंत थम गया। जब योना समुद्र में डूब रहा था, तब एक बड़ी मछली ने उसे निगल लिया। योना तीन दिन और तीन रात मछली के पेट में रहा। योना अपनी अनाज्ञाकारिता के कारण व्यथित था कि वह नीनवे नहीं गया और उसने परमेश्वर से प्रार्थना की। तब यहोवा ने मछली को आज्ञा दी और उसने उसे सूखी भूमि पर उगल दिया। फिर वह नीनवे को गया।



प्रिय नौजवानों! जब आप परमेश्वर की इच्छा को छोड़कर अपनी इच्छा पूरी करते हैं, तो आप एक उग्र समुद्र और मछली के पेट में जाने जैसी स्थिति का सामना कर सकते हैं। तो ईश्वरीय इच्छा को जानो और बुद्धिमानी से कार्य करो। वह उन सभी तेज हवाओं से आपकी रक्षा करेगा जिनका आप सामना करेंगे।



भाग - 7

जागृति लाने वाले पतरस (प्रेरितों के काम 10) द्वारा अन्यजातियों के लिए सुसमाचार। कैसरिया, इटली के बन्दरगाह नगर में, कुरनेलियुस नाम का एक सूबेदार रहता था, जो पवित्र था, और अपने सारे घराने समेत परमेश्वर से डरता था, और लोगों को बहुत दान देता था, और सदैव परमेश्वर से प्रार्थना करता था। दिन के नौवें पहर में जब कुरनेलियुस प्रार्थना कर रहा था।

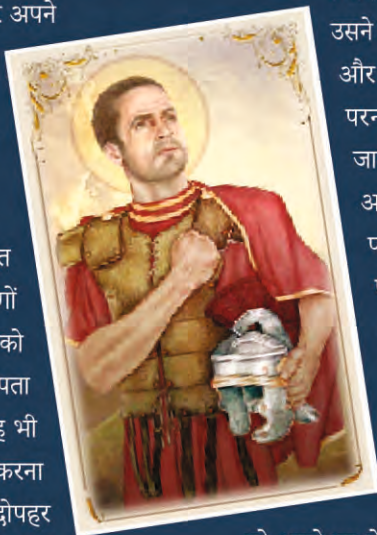
उसने एक दर्शन में देखा कि परमेश्वर का एक दूत उसके पास आ रहा है और उसे याफा शहर में लोगों को भेजने और शमीन जिसका उपनाम पतरस है, को आमंत्रित करने के लिए कह रहा है, उसका सही पता और जिसके घर में वह रह रहा था बताया और यह भी बताया कि "वह आपको बताएगा कि आपको क्या करना चाहिए"। यहूदी परंपराओं के अनुसार, पतरस भी दोपहर की प्रार्थना करने के लिए शमीन के घर के ऊपरी कमरे में गया।

जबकि वह बहुत भूखा था और खाना चाहता था, जब भोजन तैयार किया जा रहा था, तो उसे प्रकाशन हुआ (एक दर्शन में) और उसने देखा कि चारों सिरों पर बंधी एक बड़ी चादर उसके सामने उतर रही है और जमीन पर छोड़ दी गई, और उसमें पृथ्वी के हर प्रकार के चौपाए जानवर, जंगली जानवर, रेंगनेवाले जन्तु और आकाश के

पक्षी थे। और उसे यह कहते हुए एक आवाज आई, "पतरस उठ, मार और खा"। उसका मन भूखे होने पर भी दर्शन में दिखाए गए प्राणियों को नहीं खाना चाहता था, क्योंकि उसे पुराने नियम में शुद्ध और अशुद्ध के रूप में परमेश्वर द्वारा वर्णित जानवरों की सूची स्पष्ट रूप से याद थी (लैव्यवस्था 11, व्यवस्थाविवरण 14)। उसने कहा कि "मैंने कभी भी कुछ भी अशुद्ध नहीं खाया है"। इससे यह स्पष्ट है कि उसने अपनी मानवीय भावनाओं या शारीरिक कमजोरी को यहूदी प्रथाओं और परमेश्वर की आज्ञाओं का उल्लंघन करने नहीं दिया।

वचन के अनुसार, "दो गवाहों के मुंह से बात पक्की ठहरे" (व्यवस्थाविवरण 19:15), एक आवाज कह रही है, "परमेश्वर ने जिसे शुद्ध किया है उसे तू अशुद्ध न कह" तीन बार सुनाई दी। जैसा कि वह इस दर्शन के माध्यम से उसके लिए प्रभु की पुष्टि पर विचार कर रहा था, कुरनेलियुस द्वारा भेजे गए तीन जन उसे ढूंढते हुए पतरस के दरवाजे पर पहुँच गए। पवित्र आत्मा ने भी उसे बिना किसी संदेह के उनके साथ जाने का निर्देश दिया। जब यीशु ने अपने बारह प्रेरितों को सेवकाई के लिए भेजा, तो उसने आज्ञा दी कि "अन्यजातियों की तरफ न जाना, और सामरियों के किसी नगर में प्रवेश न करना, परन्तु इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों के पास जाना।" परन्तु पवित्र आत्मा अब उसे अन्यजातियों के साथ जाने का निर्देश दे रहा है। पतरस सोच सकता था कि ऐसा करना यहूदी पालन-पोषण के विपरीत होगा। हालाँकि वह बिना बहस किए तुरंत आज्ञा मानता है। वह तुरंत नीचे गया और उन्हें घर में आमंत्रित किया और सत्कारपूर्वक तैयार भोजन उनके साथ साझा किया। यह संभवतः पहली बार होगा जब किसी यहूदी ने अन्यजातियों

को अपने घर में आमंत्रित किया होगा। पतरस के लिए यह थोड़ा मुश्किल हो सकता था, उसे अपराध बोध और चिंता का एहसास होना कि अन्य यहूदी उससे घृणा कर सकते हैं और उसे बहिष्कृत कर सकते हैं। हालाँकि प्रभु के प्रति उसकी आज्ञाकारिता उसके सच्चे शिष्यत्व, प्रेम, सम्मान और प्रभु में विश्वास को दर्शाती है। अगले दिन याफा शहर से कुछ लोगों को अपने साथ लेकर वह कैसरिया में एक दिन की लगभग 30 मील की यात्रा करता है और कुरनेलियुस के घर पहुंचता है।





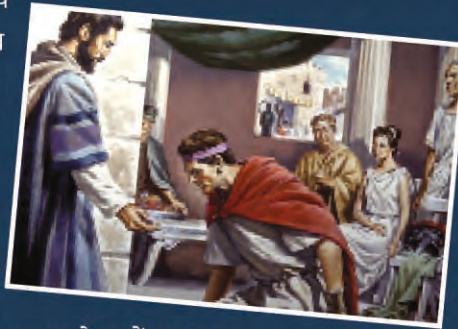
सामान्य तौर पर, रोमी सैन्य अगुवों की वीरता, अनादर, बुद्धिमत्ता, विद्रोह को कुचलने की क्षमता और मृत्यु तक अपने देश के लिए लड़ने की विशेषता होती थी। लेकिन कुरनेलियुस प्रेम करने वाला, सेही, धैर्यवान, दूसरों का आदर करने वाला, विनम्र और परमेश्वर से डरने वाला अद्वितीय था। जब पतरस उनके घर में प्रवेश करता है, तो कुरनेलियुस अपने रिश्तेदारों और दोस्तों के सामने अपने अधिकार और स्थिति पर विचार किए बिना पतरस के चरणों में गिर जाता है। पतरस न तो कुरनेलियुस के इस कार्य को स्वीकार करता है और न ही स्वयं को परमेश्वर के समकक्ष ठहराता है, तुरन्त कुरनेलियुस को उठाता है और स्वयं को दीन बना लेता है कि वह केवल एक मनुष्य है। कुरनेलियुस के घर में यह घटना पिन्तेकुस्त के दिन के 8 साल बाद हुई। अन्यजातियों के लिए कलीसिया के पहले संदेश का पहला विषय यह था कि, "ईश्वर पक्षपाती नहीं है"। पतरस ने यीशु के जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान की गवाही देते हुए न्याय और पापों की क्षमा के बारे में बात की। तब पवित्र आत्मा वचन के सब सुनने वालों पर उतर आया। जो लोग पतरस के साथ आए थे, वे यह देखकर चकित हुए

कि अन्यजातियों पर भी पवित्र आत्मा का दान उंडेला गया है, और पतरस ने उन्हें प्रभु के नाम से बपतिस्मा देने की आज्ञा दी।

हर किसी ने यह जान लिया कि शुद्ध और अशुद्ध जानवरों का दर्शन पतरस को यह सूचित करने के लिए दिखाया गया था कि यहूदी और गैर-यहूदी दोनों प्रभु द्वारा स्वीकार किए गए हैं, क्योंकि कुरनेलियुस इस बात का एक उदाहरण है की परमेश्वर उन लोगों मिलते हैं, जो जातिवाद को ध्यान दिए बिना, खुले, सच्चे और समर्पित हृदय से उसको खोजते हैं। जब पतरस के यरूशलेम से लौटा, तो इस घटना के बारे में सुनने वाले कुछ लोगों ने पतरस से बहस की।

क्रोधित या चिढ़े बिना, पतरस ने शांतिपूर्वक और धैर्यपूर्वक पवित्र आत्मा के कार्यों का वर्णन उन सभी से किया जो उससे सवाल पूछते थे और उनके बीच एकता की रक्षा की। मण्डली ने परमेश्वर की महिमा की कि "परमेश्वर ने अन्यजातियों को भी जीवन के लिए मनफिराव का दान दिया है"।

पतरस के साथ एक यात्रा कई और महत्वपूर्ण... घटनाओं के साथ जारी रहेगी...



सबसे पहला ताररहित फोन परमेश्वर ने बनाया था।
उन्होंने इसे "प्रार्थना" नाम दिया... यह कभी भी
अपना सियल नहीं खोता है और आपको इसे कभी
रिचार्ज नहीं करना पड़ता है। इसे कहीं भी
इस्तेमाल करें...!

संकट के दिन मुझे पुकार; मैं तुझे छुड़ाऊंगा और तू
मेरी महिमा करने पाएगा।

(भजन संहिता 50:15)

प्रार्थना गाइड

नवंबर 2022

बच्चों का अवैध व्यापार:

भारत में हर साल करीब 60 हजार बच्चों का अपहरण किया जाता है। हर 8 मिनट में एक बच्चे का अपहरण होता है और हर दिन 174 बच्चे लापता हो जाते हैं। बाल कल्याण विभाग के अनुसार प्रत्येक वर्ष 5 लाख बच्चे लापता हो जाते हैं जिनमें से केवल 50% को ही बचाकर वापस लौटाये जाते हैं; शेष 50% का जीवन एक प्रश्न चिह्न है। अगवा किए गए अधिकांश बच्चों को मजदूरी, भीख मांगने और वेश्यावृत्ति के लिए मजबूर किया जाता है। "टाइम्स ऑफ इंडिया" के अनुसार, तमिलनाडु में हर दिन कम से कम 5 बच्चे लापता हो जाते हैं। ये बच्चे शारीरिक शोषण का सामना करते हैं और एड्स जैसे एसटीडी से प्रभावित होते हैं और भय, चिंता, तनाव, शर्म और दोष के कठोर भविष्य का सामना करते हैं।



प्रार्थना के विषय :

- आइए हम उन बुरी आत्माओं के बांधे जाने के लिए प्रार्थना करें जो बच्चों और महिलाओं की तस्करी के पीछे काम करती हैं जो उनके भविष्य को बर्बाद करने की कोशिश कर रही हैं।
- आइए हम प्रार्थना करें कि भविष्य के बारे में सोचे बिना इस स्वार्थी कार्य में लिप्त नेताओं के दिलों को छुआ जाए और वे पश्चाताप करें।
- आइए हम प्रार्थना करें कि बच्चों के साथ दुर्व्यवहार करने की योजना बनाने वाले शैतान की चालें नष्ट हो जाएँ।
- आइए हम प्रार्थना करें कि लड़कियों और महिलाओं की स्थिति में बदलाव आए और उन्हें पर्याप्त सुरक्षा मिले।
- आइए हम प्रार्थना करें कि परमेश्वर बच्चों के लिए अच्छी सुरक्षा का आदेश दें और प्रभावित बच्चे इससे बाहर आएँ।

बाल श्रम।

अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के आंकड़ों के अनुसार, 5 से 17 वर्ष की आयु के लगभग 153 मिलियन बच्चे बाल श्रमिक हैं। इनमें से 73 मिलियन लोग खतरनाक व्यवसायों में लगे हुए हैं। लगभग आधा (72 मिलियन) बाल श्रम अफ्रीका में पाया जाता है। हर 5 में से एक बच्चा बाल मजदूर के रूप में काम करता है। पूर्वी एशिया में बाल श्रम बढ़ रहा है। चौंकाने वाला तथ्य यह है कि बाल श्रमिक न केवल विकासशील पूर्वी एशियाई और अफ्रीकी देशों में पाए जाते हैं बल्कि अच्छी तरह से विकसित अमेरिकी और यूरोपीय देशों में भी पाए जाते हैं। सीएसीएल ने बताया है कि अकेले भारत में 70 से 80 मिलियन बाल श्रमिक हैं। इसी तरह, यह भी बताया गया है कि बांग्लादेश में भी बाल श्रम है।

प्रार्थना के विषय:

- आइए हम प्रार्थना करें कि परमेश्वर स्वयं उन बच्चों को बचाए जो बाल श्रमिक बन गए हैं।
- आइए हम प्रार्थना करें कि बच्चों को मजदूर बनाने की यह स्थिति बदले और परिवारों का भला हो।
- आइए हम उन बच्चों के बचाव के लिए प्रार्थना करें जो बाल श्रम के सबसे खतरनाक व्यवसायों में शामिल हैं।
- आइए हम प्रार्थना करें कि बच्चों को बाल श्रम के रूप में लेने से और उन्हें ड्रास, तस्करी और वेश्यावृत्ति जैसी असामाजिक गतिविधियों में बेचे जाने से रोका जाए।
- आइए हम प्रार्थना करें कि इसमें शामिल बिचवई इस पाप से मुक्त हों और इस व्यवसाय को छोड़ दें।





बाल विवाह :

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5) ने 2 जुलाई से 14 नवंबर, 2019 तक लगभग 11,346 परिवारों का एक सर्वेक्षण किया। इस सर्वेक्षण में, आंध्र प्रदेश 29.3% बाल विवाह की सबसे अधिक संख्या के साथ पहले स्थान पर है। हालांकि पिछले सर्वेक्षण में आंध्र प्रदेश में बाल विवाह की संख्या में 33% की कमी आई है, आंध्र प्रदेश अन्य राज्यों की तुलना में शीर्ष पर बना हुआ है। तेलंगाना 23.5% के साथ दूसरे स्थान पर है, कर्नाटक 21.3% के साथ तीसरे स्थान पर है, तमिलनाडु 12.8% के साथ चौथे स्थान पर है और केरल 6.3% के साथ अंतिम स्थान पर है। इसके अलावा अध्ययन में यह भी पाया गया है कि 15 से 19 साल की उम्र की महिलाएं शादीशुदा हैं और उनके बच्चे भी हैं। 2019-2020 और 2019-2020 में किए गए NHFS (राष्ट्रीय स्वास्थ्य और परिवार सर्वेक्षण) सर्वेक्षण के अनुसार भारत में बाल विवाह में 3.3% की कमी आई है। तमिलनाडु में भी 3.59% और 12.8% की बाल विवाह में कमी दर्ज की गई। बाल विवाह के मामले में भारत दुनिया में सबसे ऊपर है।

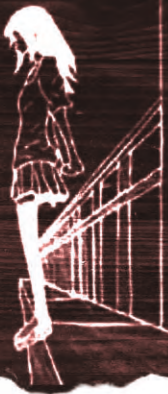
प्रार्थना के विषय:

- आइए हम प्रार्थना करें कि हमारे देश से बाल विवाह पूरी तरह से समाप्त हो जाए।
- आइए हम बच्चों की सुरक्षा और बाल विवाह के बारे में सोच रहे माता-पिता के मध्य जागरूकता पैदा करने के लिए प्रार्थना करें।
- आइए हम सरकार के लिए प्रार्थना करें कि वे नाबालिगों को इसके बारे में जागरूक करे और उन्हें इसे रोकने की शक्ति दे।
- आइए हम बाल विवाह के कारण मानसिक पीड़ा और संकट से पीड़ित बच्चों के उद्धार और आराम के लिए प्रार्थना करें।
- दुख की बात है कि बाल विवाह में भारत का विश्व में प्रथम स्थान है। आइए हम भारत में लोगों के परिवर्तन के लिए प्रार्थना करें।



छात्रों की आत्महत्या:

राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, 2021 में आत्महत्या करने वाले छात्रों की संख्या में 4.5% की वृद्धि हुई है। 2021 में, महाराष्ट्र में 1834 छात्रों ने आत्महत्या की। मध्य प्रदेश में 1308 और तमिलनाडु में 1246 छात्रों ने आत्महत्या की। 2020 में 12,526 छात्रों ने आत्महत्या की, जबकि 2021 में यह संख्या बढ़कर 13,089 हो गई है। 2017 से 2019 के बीच, देश के कुल आत्महत्या के मामलों में छात्रों की आत्महत्या का मामला लगभग 7.40% से 7.60% था। 2020 में यह बढ़कर 8.20% हो गया है और 2021 में इसमें 32.15% की कमी आई थी। 2017 में छात्र आत्महत्या के मामलों की कुल संख्या 9905 थी।



प्रार्थना के विषय:

- आइए हम प्रार्थना करें कि छात्रों के बीच आत्मघाती विचारों को खत्म किया जाए और आत्महत्या की भावनाओं पर अंकुश लगाया जाए।
- आइए प्रार्थना करें कि परीक्षा में असफल होने के कारण आत्महत्या करने की भावना बंध जाए और छात्रों की मानसिकता बदल जाए।
- आइए हम भारत में छात्रों के ऊपर परमेश्वर के शासन और सुरक्षा के लिए प्रार्थना करें।
- आइए हम प्रार्थना करें कि स्कूल जाने वाले छात्रों के लिए स्कूलों में जागरूकता केंद्र खोले जाएं।
- आइए हम परमेश्वर से सुरक्षा की प्रार्थना करें ताकि कोई छात्र अब और आत्महत्या न करे।



RED ALERT बिलाम

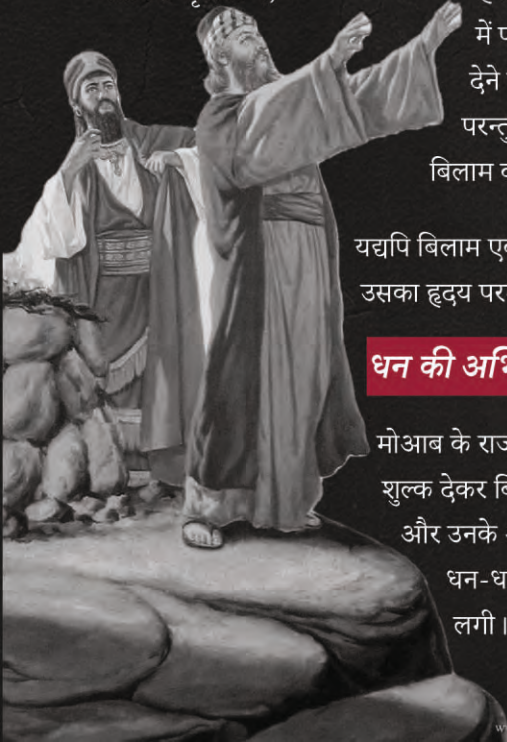
मसीह में प्रिय युवा लोगों, इस रेड अलर्ट श्रृंखला के माध्यम से आपसे फिर से मिलना बहुत खुशी की बात है। इस लेख के माध्यम से हम इस तथ्य पर ध्यान दे रहे हैं कि जो लोग परमेश्वर के द्वारा जाने जाते थे और जो दौड़ को अच्छी तरह से दौड़ रहे थे, वे अपनी छोटी सी गलती, पाप और अवज्ञा के कारण परमेश्वर की बुलाहट से दूर हो गए और घातक दंड प्राप्त किया। इस महीने की चेतावनी श्रृंखला में,

हम बओर के पुत्र बिलाम पर ध्यान करेंगे। गिनती अध्याय 22-24 में हम बिलाम के बारे में पढ़ते हैं। मोआब का राजा इस्राएलियों से डरता था, इसलिये उसने बिलाम को उन्हें श्राप देने के लिये बुलवाया। हालाँकि, बिलाम ने तीन बार इस्राएलियों को आशीर्वाद दिया। परन्तु गिनती 31:8 में लिखा है कि इस्राएलियों ने बिलाम को मार डाला। इस्राएलियों ने बिलाम को जिसने उन्हें आशीर्वाद दिया था क्यों मार डालें?

यद्यपि बिलाम एक भविष्यद्वक्ता था जिसे परमेश्वर ने विशेष वरदानों से आशीर्षित किया था, परन्तु उसका हृदय परमेश्वर को कभी भी भाता नहीं था। किस वजह से वह इस कठोर न्याय में पड़ गया?

धन की अभिलाषा, लालच

मोआब के राजा बालाक ने इस्राएलियों को श्राप देने के लिए अपने देश के पुरनियों को ज्योतिषी की शुल्क देकर बिलाम के पास भेजा। सबसे पहले, बिलाम ने इसके बारे में परमेश्वर से पूछताछ की और उनके अनुरोध को अस्वीकार कर दिया (गिनती 22:15)। जब उसने देखा कि बड़े-बड़े धन-धान्य से सम्पन्न राजा-महाराजा मेरे पास आये हैं, तो उसके हृदय में उसकी लालसा होने लगी।





बिलाम जिसने परमेश्वर की इच्छा पूरी की, प्रसिद्धि और धन को देखकर परमेश्वर की इच्छा से भटक गया और बालाक के साथ जाने के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करने लगा। परमेश्वर इससे प्रसन्न नहीं हुआ, परन्तु जब बिलाम प्रार्थना करता रहा, तो यहोवा ने उसे एक शर्त पर जाने की अनुमति दी। उसका हृदय परमेश्वर की दृष्टि में टेढ़ा था (गिनती 22:30)। परमेश्वर के कहे अनुसार करने के बजाय उसका मन उस पुरस्कार पर लगा हुआ था जो मोआबी राजा देगा। जो कुछ उसने परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध किया वह उसके पतन की शुरुआत थी। 2 पतरस 2:15 में लिखा है, “वे सीधे मार्ग को छोड़कर भटक गए हैं, और बोर के पुत्र बिलाम की सी चाल चलने लगे हैं, जो अधर्म की मजदूरी से प्रीति रखता था।” हमारे जीवन में भी हमारा उद्देश्य प्रभु को प्रसन्न करना होना चाहिए। यदि हम धन, संपत्ति या प्रसिद्धि पर अपना मन लगाते हैं तो हमारा उद्देश्य पूरा नहीं होगा और इसका अंत विनाश होगा।

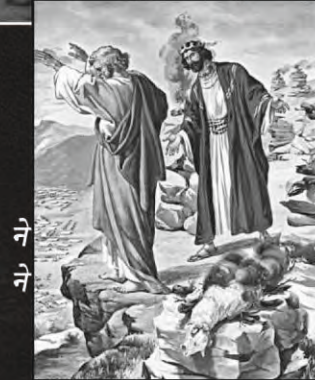


दे सकता, यदि इस्राएल उसके विरुद्ध पाप करें। इसलिए आज तक बिलाम का उपयोग उन लोगों के प्रतीक के रूप में किया जाता है जो दूसरों को पाप करने के लिए लुभाते हैं।

गिनती 31:8 में हम पढ़ते हैं कि इस्राएलियों ने उसे मार डाला। उसका अंत दुःखद था। क्या आज हमारा चाल-चलन, वचन, कर्म, पवित्रता दूसरों के सामने परमेश्वर की महिमा करता है? वा दूसरों को ठोकर खिलाता है? आइए हम अपनी जांच करें और कार्य करें।

प्रिय नौजवानों! यद्यपि बिलाम एक ऐसा व्यक्ति था जिसे परमेश्वर ने शक्तिशाली रूप से

इस्तेमाल किया था, फिर भी उसने जो निर्णय लिए और उसकी अनाज्ञाकारिता ही वे कारण थे कि इस्राएलियों को पाप किया। भौतिकवाद उसे परमेश्वर के उद्देश्य को भूलने के लिए धोखा दिया और उसे विनाश के



मार्ग पर ले गया। यहाँ तक कि हमारे जीवन में बाधाएँ और पापमय प्रलोभन हमें परमेश्वर के नियत मार्ग से हटाने के लिए आएँगे। लेकिन अगर हम उस उद्देश्य में सावधान रहें जिसके लिए परमेश्वर ने हमें चुना है, तो हम अपनी दौड़ को विजयी रूप से समाप्त कर सकते हैं।

बिलाम - इस्राएल के ठोकर का कारण।

यहोवा के दूत द्वारा चेतावनी दिए जाने के बाद भी बिलाम गया और बालाक से मिला। यद्यपि बिलाम को इस्राएल के राष्ट्र को श्राप देने के लिए बुलाया गया था, उसने यहोवा की आज्ञा के अनुसार उन्हें तीन बार आशीर्वाद दिया। इस बात से बाराक भड़क गया।

बिलाम ने बालक के क्रोध को शांत करने और उससे पुरस्कार प्राप्त करने के लिए बालक को एक झूठी सलाह दी। हम इसके बारे में प्रकाशितवाक्य 2:14 में पढ़ते हैं, “बिलाम की शिक्षा, जिसने बालाक को इस्राएलियों के आगे ठोकर का कारण रखना सिखाया, कि वे मूरतों के बलिदान खाएँ, और व्यभिचार करें।” गिनती 25:1 में हम देखते हैं कि लोग मोआबी स्त्रियों के साथ व्यभिचार करने लगे। इस ठोकर का कारण बिलाम था, जो यहोवा का वचन सुनाने को गया, और रुपयों के लोभ के कारण यहोवा को अपवित्र ठहराने वाला बना। बिलाम ने मोआबी राजा को सलाह दी कि परमेश्वर के सिवाय कोई इस्राएल को श्राप नहीं

“इस कारण जब कि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हम को घेरे हुए है, तो आओ हम हर एक रोकनेवाली वस्तु और उलझाने वाले पाप को दूर करके, वह दौड़ जिस में हमें दौड़ना है धीरज से दौड़ें, हमारे विश्वास के कर्ता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर ताकते रहें।” (इब्र. 12:1-2)

आइए अगले महीने रेड अलर्ट के क्षेत्र में एक और शख्स से मिलते हैं...



मेरे प्यारे भाई और बहन को सादर प्रणाम। आइए हम इस महीने के लेख में इस बात का अनुरोध करते हुए प्रवेश करें, “कि तुम नए मनुष्यत्व को पहिन लो, जो परमेश्वर के अनुसार सच्ची धार्मिकता और पवित्रता में सृजा गया है”। इफिसियों 4:24। इस महीने के लेख का शीर्षक है, “रक्षक”। प्रिय मित्रों, बाइबल कहती है, यह संसार जिसमें हम रहते हैं आदम के पाप के कारण पाप के अधीन है।

इस परेशान दुनिया में हमें कई स्थितियों में शारीरिक खतरों, आर्थिक समस्याओं, प्राकृतिक और कृत्रिम क्षतियों, आध्यात्मिक संघर्षों, बाधाओं और अभिशापों का सामना करना पड़ता है। ऐसी परिस्थितियों में, हमारे लिए, जो परमेश्वर की सन्तान हैं, वही हमारा किला और हमारी शरण है। भजन संहिता 46:1 कहता है, “परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है, संकट में अति सहज से मिलने वाला सहायक”।

हां दोस्तों। एक बात जिसके बारे में बहुत से मसीही आश्चर्य करते हैं, वह यह है कि “हमें खतरा क्यों है? हमारा कभी किसी को नुकसान पहुँचाने का इरादा नहीं था! भले ही हम अच्छा करते हैं, फिर भी हम इतना कष्ट क्यों उठाते हैं?” यह शास्त्र के विपरीत विचार है, क्योंकि हम पतित संसार में रहते हैं। मैं आमतौर पर जिस उदाहरण का उपयोग करता हूँ वह है “मैं सड़क पर एक कार में सभी सुरक्षा उपकरणों के साथ यात्रा कर रहा हूँ। लेकिन अगर एक नशे में चालक द्वारा आने वाले वाहन को नियंत्रण से बाहर कर दिया जाता है और वह मुझसे टकरा जाता है, तो मैं प्रभावित होता हूँ। हां।” दोस्तों, इसीलिए यीशु कहते हैं, “संसार में तुम्हें दुख है, परन्तु ढाढ़स बांधो; क्योंकि मैंने संसार को जीत लिया है” (यूहन्ना 16:33)।

साथ ही, इस संकटग्रस्त संसार में वही हमारा एकमात्र रक्षक है। अगर हम प्राकृतिक आपदाओं से परे देखें, तो आमतौर पर शैतान

रक्षक

और हमारे गलत फैसले ही हमें परेशानी में डालते हैं। 1 पतरस 5:8 कहता है, “सचेत हो, और जागते रहो, क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जने वाले सिंह की नाई इस खोज में रहता है, कि किस को फाड़ खाए।” हाँ, मेरे मित्रों, शैतान ने हमें चुराने, मारने और नष्ट करने का निश्चय किया है। परन्तु ढाढ़स बान्धो, क्योंकि हमारे प्रभु परमेश्वर ने उसको पांवों से रौंदा है और जय पाई है।

बाइबल यह भी कहती है, “परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषाओं से खिंचकर और फंसकर परीक्षा में पड़ता है”

(याकूब 1:14)। जैसा कि रोमियों 7 में वचन कहता है, कई बार हम वह करने का निर्णय लेते हैं

जिससे हम घृणा करते हैं, बजाय इसके कि हम क्या करना चाहते थे। परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु मसीह के द्वारा हमें ऐसे पापी शरीर से छुड़ाया है। इसलिए, हम अब पाप के अधीन नहीं हैं, की अपनी स्वयं की इच्छाओं से पाप में खींच जाएं। मेरे दोस्तों, इन बातों को साझा करने का महत्वपूर्ण कारण यह है कि जब हम प्रतिदिन यीशु की आज्ञाकारिता में रहते हैं, तो हम कई खतरों से बच सकते हैं।

जब शैतान हमें नष्ट करने के लिए हमारे नियंत्रण से परे स्थानों और परिस्थितियों से हमारे जीवन में खतरे लाने की योजना बनाता है, तो परमेश्वर हमारी ताकत और रक्षक है; वह हमारा किला है और अति सहज से मिलने वाली सहयता है।

बाइबल कहती है, “वह तुझे अपने पंखों की आड़ में ले लेगा, और तू उसके परों के नीचे शरण पाएगा; उसकी सच्चाई तेरे लिये ढाल और झिलम ठहरेगी” (भजन संहिता 91:4)। इसी तरह, यूहन्ना 10:28 कहता है, “वे कभी नाश न होंगी, और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा”।



बाल दिवस

14 नवंबर 2022



भारत में हर साल 14 नवंबर को बाल दिवस मनाया जाता है जो दिवंगत प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की जन्मतिथि है। यह दिन बच्चों के लिए नेहरू के प्यार को दिखाने के लिए मनाया जाता है।



जवाहरलाल नेहरू का दृढ़ विश्वास था कि बच्चे राष्ट्र की वास्तविक शक्ति और समाज का आधार होते हैं। उन्होंने कहा, “आज के बच्चे कल के भारत का निर्माण करने जा रहे हैं। जिस तरह से हम उन्हें बड़ा करेंगे, वह देश का भविष्य तय करेगा।”

हमारे प्रभु यीशु मसीह भी छोटे बच्चों से बहुत प्रेम करते थे। “बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मना न करो, क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है” (मत्ती 19:14)। प्रभु कहते हैं कि जब तक कोई एक छोटे बच्चे की तरह नहीं बनता और खुद को विनम्र नहीं करता, वह स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा।

बच्चे वो खज़ाना हैं जो हमारे जीवन में अपार खुशियाँ लाते हैं। इन बच्चों की दुनिया बड़ी निराली है। यह सपनों से भरा है। उनकी दुनिया में वयस्कों की परेशानियाँ नहीं हैं। बच्चों में चीजों से निपटने की ठीक उसी तरह की प्रकृति होती है। बच्चे एक खूबसूरत बगीचे में फूलों वाले पौधे हैं।

अगर बच्चों को उस तरह से नहीं पाला जाता जैसा उन्हें होना चाहिए, तो वे एक महान इंसान नहीं बन पाएंगे। चाहे वह डॉक्टर हो, इंजीनियर हो, वकील हो, वैज्ञानिक हो या कुछ भी हो। सबसे पहले, उनके लिए यह बहुत ही महत्वपूर्ण है की वे मनुष्य के रूप में विकसित हों और जीएं।

देश का भविष्य तय करने वाले बच्चों को पालने के लिए कुछ सलाह :

- ▶ बच्चों को यह सिखाना अच्छा है कि वे जीवन में जो कुछ भी चाहते हैं वह तुरंत उपलब्ध नहीं होता। अगर उन्हें वह मिलता है जिसके लिए उन्होंने चाहा था, ठीक और अच्छा है। हालाँकि, यदि सा नहीं है, तो उन्हें दिल छोटा नहीं करना चाहिए।
- ▶ उनके अंदर आत्मविश्वास जगाएं। बच्चों को बताएं, “आप कुछ भी कर सकते हैं”। वे इस पर विश्वास करने लगेंगे।
- ▶ खेलते समय बच्चों को गिरने और चोट लगने दें। उन्हें मत रोकें। तभी वे असफलता से उठना और चलना सीखेंगे।
- ▶ माता-पिता की सबसे बड़ी गलतियों में से एक है तुलना करना। बच्चों की तुलना किसी से न करें, खासकर उनके भाई-बहनों से।
- ▶ जब बच्चे गलत रास्ते पर भटक जाते हैं या कुछ बुरा करते हैं, तो उनकी निंदा की जानी चाहिए और उन्हें अनुशासित किया जाना चाहिए। उन्हें सद्गुणों को जानना और समझना चाहिए। इसकी ओर उनका मार्गदर्शन करें।
- ▶ अपने बच्चों के लिए एक आदर्श बनें। ऐसा व्यवहार/प्रतिक्रिया न करें जिससे बच्चों के दिल को ठेस पहुंचे।